SPIRITUAL WARFARE

आत्मिक मल्लयुद्ध

लेखक
डॉ० रामराज डेविड

विषय-सूची

लेखक का प्राक्कथन	04
भूमिका	05
अध्याय-01 प्रार्थना	06
अध्याय-02 विभिन्न प्रकार की प्रार्थनाएं	10
अध्याय-03 उपवास के साथ प्रार्थना	13
अध्याय-04 प्रार्थना के महान योद्धा	16
अध्याय-05 आत्मिक मल्लयुद्ध	23
अध्याय-06 आत्मिक मल्लयुद्ध की रणनीति	24
अध्याय-07 आत्मिक मल्लयुद्ध की कार्यनीति	27
अध्याय-08 दुश्मन को जानें	28
अध्याय-09 अपने आपको जानें	36
अध्याय-10 आत्मिक मल्लयुद्ध की तैयारी	39
अध्याय-11 शत्रु एवं उसकी सेना पर हमला करो	52
बिब्लियोग्राफी	56

Creation Autonomous Academy

आभार

सर्वप्रथम मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं कि उसने मुझे अपनी बुद्धि और समझ प्रदान की कि मैं आत्मिक मल्लयुद्ध पर कुछ लिख सकूं। तत्पश्चात मैं अपने शिक्षकों के प्रति आभार प्रकट करना चाहता हूं जिन्होंने मुझे इतनी गहनता से वचन की शिक्षा प्रदान किया। जिन्होंने मुझे यह पुस्तक लिखने के लिए प्रेरित किया। में उन सभी व्यक्तियों का आभारी हूं जिन्होंने पुस्तक के लेखन, संशोधन, टाइपिंग, और अंतिम रुप देने में, मुझे सहयोग प्रदान किया। उन मित्रों का भी मैं आभारी हूं जिनका स्नेह और सहयोग मुझे हमेंशा मिलता रहा।

Creation Autonomous Academy

लेखक का प्राक्कथन

'आत्मिक मल्लयुद्ध' पुस्तक इस बात पर ध्यान केन्द्रित करेगी कि किस प्रकार पवित्र आत्मा की अगुवाई में प्रार्थनापूर्ण जीवन व्यतीत किया जाए। लेखक ने स्वयं विभिन्न बातों का अनुभव किया है। जिनको इस अध्ययन में शामिल किया है।

'प्रार्थना एवं आत्मिक मल्लयुद्ध' नामक यह पुस्तक अनेक वर्षों के अध्ययन-अध्यापन एवं अनुभव के उपरान्त विश्वासियों की आवश्यकता के अनुसार तैयार की गयी है। यह पुस्तक प्रार्थना योद्धाओं और आत्मिक मल्लयुद्ध में संघर्षरत विश्वासियों के मार्गदर्शन के लिए लिखी गयी है। यह पुस्तक सभी पाठकों के लिए सरल, रोचक एव व्यवहारिक है।

मेरी इच्छा है कि विश्वासी जन इस पुस्तक से सहायता प्राप्त करें। व्यवहारिक मार्गदर्शन हेतु इस पुस्तक का उपयोग करें। मैं वस्तुतः इस पुस्तक को प्रस्तुत करने के द्वारा पाठकों से यह आशा करता हूं कि वे इसका भरपूर उपयोग आत्मिक संघर्ष के लिए करेंगे।

डॉ० रामराज डेविड

Creation Autonomous Academy

भूमिका

जो साहस हमें उसके सम्मुख होता है वह यह है कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ मांगें,तो वह हमारी सुनता है। यदि हम जानते हैं कि जो कुछ हम उससे मांगते हैं वह हमारी सुनता है तो यह भी जानते हैं कि जो कुछ हमने उससे मांगा वह हमें प्राप्त हो चुका है।(1 यूहन्ना 5:14-15)

जब हम परमेश्वर की इच्छानुसार प्रार्थना करते हैं तो वह हमारी प्रार्थना सुनता है और उसका उत्तर हमें देता है।

''-----इसी चट्टान पर मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा और अद्योलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।'' (मत्ती 16:18) यह जयवंत कलीसिया का चित्रण है जो नरक के चारों ओर घेराबन्दी कर रही है और इसके कैदियों को छुड़ाने के लिए इसके फाटकों को तोड़ रही है।

फाटक बचाव के लिए होते हैं। ''अद्योलोक के फाटक '' अद्योलोक के बचाव के लिए हैं। प्रभु यीशु ने प्रतिज्ञा की कि उसकी कलीसिया इतनी साहसी और सामर्थ्य से परिपूर्ण होगी -कि कलीसिया अद्योलोक को जहां कहीं भी प्रकट रूप में पाएगी उस पर हमला करेगी। उसकी कलीसिया दाऊद द्वारा मसीह के विषय में की गयी इस महिमामय भविष्यवाणी को पूरा करेगी; ''क्योंकि यहोवा ने सिय्योन को फिर बनाया है; वह अपनी महिमा में प्रकट हुआ है। उसने दीन-हीनों की प्रार्थना पर ध्यान दिया, और उनकी प्रार्थना को तुच्छ नहीं जाना।''

''यह आने वाली पीढ़ी के लिए लिखा जाएगा---क्योंकि उसने------ऊँचे स्थान से दृष्टि की, हां, यहोवा ने स्वर्ग से पृथ्वी को निहारा है, कि बन्दियों का कराहना सुने, और मृत्यु-दण्ड के भागियों को मुक्त करे।'' (भजन 102:16-20) अद्योलोक के फाटक उनकी कलीसिया को बन्द नहीं कर सकते जो विश्वास करते हैं कि वे मसीह के साथ एक किए गए हैं। यीशु ने कहा : ''प्रभु का आत्मा मुझ पर है, क्योंकि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है। उसने मुझे भेजा है कि मैं बन्दियों को छुटकारे का और अन्धों को दृष्टि पाने का सन्देश दूं और दलितों को छुड़ाऊं।'' (लूका 4:18)

यह अध्ययन उनके लिए समर्पित है जो परमेश्वर से निरन्तर संगति रखना चाहते हैं, जो अद्योलोक के फाटकों पर हमला करने में यीशु के साथ सहभागी होना चाहते हैं।

Creation Autonomous Academy

अध्याय-1

प्रार्थना

''परमेश्वर से बातें करना या परमेश्वर से कुछ कहना।''

''प्रार्थना परमेश्वर और व्यक्ति के बीच में एक घनिष्ट सम्बन्ध अर्थात संगति की ओर संकेत करता है। परमेश्वर के साथ संगति रखने में दो प्रमुख बातें पायी जाती हैं। पहली यह कि परमेश्वर अपने वचन के द्वारा हमसे बातें करता है। दूसरी यह कि हम प्रार्थना में परमेश्वर से बातें करते हैं।

''प्रार्थना परमेश्वर के साथ बातचीत करना होता है। प्रार्थना करते समय हम परमेश्वर को बताते हैं और दूसरी ओर पवित्र वचन के द्वारा परमेश्वर हमें अपनी बातें बताता है।'' इस प्रकार परमेश्वर और हमारे बीच वार्तालाप पूरा होता है।

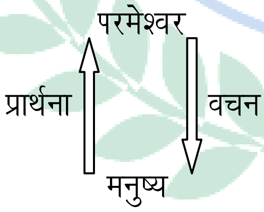

जितना महत्वपूर्ण परमेश्वर का वचन है उतना ही महत्वपूर्ण परमेश्वर से प्रार्थना करना है।

Creation Autonomous Academy

''प्रार्थना वह कुंजी है जिससे बड़े से बड़े भेद खुल जाते हैं।''

''प्रार्थना वह श्वांस है जिसे हम आत्मिक जीवन में लेते हैं।''

इस श्वांस के द्वारा हम आत्मिक रूप से जीवित रहते हैं।

इस परिभाषा से यह स्पष्ट होता है कि आत्मिक रूप से जीवित रहने के लिए प्रार्थना उतना ही जरूरी है जितना शारीरिक रूप से जीवित रहने के लिए सांस लेना। प्रार्थना के बिना हम आत्मिक रूप से जीवित नहीं रह सकते।

'' प्रार्थना उस सुगन्धित धूप अर्थात धुएं के समान है जो नीचे से उठकर स्वर्ग तक परमेश्वर के नथनों में पहुंचती है।'' प्रार्थना से परमेश्वर प्रसन्न हो जाता है।

प्रार्थना क्यों करना चाहिए ? :-

1. प्रार्थना करना परमेश्वर की आज्ञा है।:-

परमेश्वर के वचन में प्रार्थना करने के लिए सख्त आदेश है।(मत्ती 7:7)

2. हम परमेश्वर की संतान हैं।:-

हम परमेश्वर के पुत्र और पुत्रियां हैं और परमेश्वर हमारा स्वर्गीय पिता है। इसलिए परमेश्वर की संतान होने के नाते हमें उससे बातें करना चाहिए। अर्थात परमेश्वर से प्रार्थना करना चाहिए। (रोमि० 8:15)

3. प्रार्थना हमारी आवश्यकता है।:-

प्रार्थना हमारी प्रतिदिन की आवश्यकता है।

क- परमेश्वर से संगति रखने के लिए

ख- आत्मिक जीवन में जीवित रहने के लिए

ग- दुःख की घड़ी में व बीमारी के समय हरेक परिस्थिति में प्रार्थना करना है।

4. प्रार्थना की दूसरों को आवश्यकता है।:-

हमारी प्रार्थनाओं की दूसरों को आवश्यकता है इसलिए हम दूसरों के लिए प्रार्थना करें। दूसरों के लिए प्रार्थना करने को हम मध्यस्थता की प्रार्थना कहते हैं।

5. प्रार्थना का आदर्श:-

बाइबल में प्रार्थना करने के अच्छे आदर्श हैं जो हमें प्रोत्साहित करते हैं कि हम भी परमेश्वर से प्रार्थना करें। जैसे इब्राहीम, मूसा, स्वयं प्रभु यीशु मसीह।

आज के प्रार्थना के अच्छे योद्धा भी हमारे लिए नमूना प्रस्तुत करते हैं। आज भी विश्वासीगण प्रार्थना करते हैं और अपने जीवन में उसका उत्तर पाते हैं।

प्रार्थना कब करना चाहिए ?:-

प्रातः,दोपहर एवं संध्या (भजन 5:3, 55:17) तीनों समय (दानि॰ 6:10) दिन में व रात में (भजन 88:1) लगातार (उत्पत्ति 32:26) निरन्तर (1 थिस्स० 5:17) प्रार्थना करना चाहिए।

हमारा दिन प्रार्थना से आरम्भ होना चाहिए और दिन का अन्त प्रार्थना से हो। हरेक कार्य का आरम्भ प्रार्थना से होना चाहिए।

Creation Autonomous Academy

बीमारी, दुःख, संकट, क्लेश व विद्रोहियों से बचने के लिए। हरेक परिस्थिति में परमेश्वर से प्रार्थना करना चाहिए। (भजन 140:4, 5:17, याकूब 5:13-14, भजन 116, भजन 77:1-2)

प्रार्थना कैसे करना चाहिए ?:-

प्रार्थना कैसे करना चाहिए इस सम्बन्ध में निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए।-

1. आत्मिक तैयारी के साथ
2. परमेश्वर की इच्छानुसार
3. दिखावटी न हो

4. मन से प्रार्थना

5. पवित्र आत्मा की अगुवाई में।

6. पूरे विश्वास के साथ, दीनता, नम्रतापूर्वक, क्षमाभाव में, पवित्रता से, पश्चाताप सहित, संयम से, सच्चाई से, एवं पूर्ण हृदय से (रोमि० 8:26-27, इब्रा० 11:6, मत्ती 21:22, याकूब 1:6, 2 इति० 7:14, मत्ती 6:12, अय्यूब 11:13, 1 तीमु० 2:8, सभोपदेशक 5:2, 1 राजा 8:33, यिर्म० 36:7, फिलि० 4:6, उत्पत्ति 18:27, 1 पतरस 4:7, भजन 119:58, भजन 17:1, यूहन्ना 4:24, मत्ती 6:5)

प्रार्थना की मुद्राएं :-

प्रार्थना की निम्नलिखित मुद्राएं बाइबल में पायी जाती हैं।:-

1. खड़े होकर (1 राजा 8:22)
2. दण्डवत करते हुए (भजन 95:6)
3. घुटने टेककर (2 इति० 6:13)
4. मुंह के बल गिरकर (गिनती 16:22)
5. हाथ फैलाकर (यशा० 1:15)
6. हाथ उठाकर (भजन 28:2)
7. आंख बन्दकर (बाधाओं और परीक्षाओं से बचने के लिए)
8. आंख खोलकर (परिस्थिति के अनुसार)

जिस विधि से आत्मा आपकी अगुवाई करे आप उस मुद्रा में परमेश्वर से प्रार्थना कर सकते हैं।

प्रार्थना करने के सम्बन्ध में कुछ विशेष सावधानियां :-

प्रार्थना करने के सम्बन्ध में निम्नलिखित सावधानियां वरतें।-

1. बाधा डालने वाली बातों को दूर करें।(1 पत० 3:7)
2. सुस्ती व लपरवाही न वरतें।(लूका 8:1)
3. ढोंग न करें।(मत्ती 6:5-6)
4. अविश्वास न करें।
5. बुरे उद्देश्य से न मांगें।(याकूब 4:3)
6. पाप में न बनें रहें।(यशा० 59:2)

Creation Autonomous Academy

प्रार्थना का उत्तर किन लोगों को नहीं मिलता ?:-

1. जो बुरे उद्देश्य से मांगते हैं।(याकूब 4:3, भजन 66:18)
2. जो पाप में बने रहते हैं।(यशा० 59:2)

प्रार्थना में पवित्र आत्मा का स्थान :-

परमेश्वर की इच्छा है कि उसके लोग पवित्र आत्मा में प्रार्थना करें। उसका कारण यह है कि पवित्रआत्मा परमेश्वर की त्रिएकता में एक है। इसलिए पवित्र आत्मा परमेश्वर पिता की इच्छा को भली-भांती जानता है। इस प्रकार

पवित्र आत्मा में प्रार्थना करने के द्वारा हम परमेश्वर की इच्छा को पूरी करते हैं। हमें नहीं मालूम कि प्रार्थना कैसे करना चाहिए ? आज कल मसीही समाज में कुछ लोग किताबों से पढ़कर प्रार्थना करते तथा अन्य दूसरे लोग रटी-रटाई प्रार्थना करते हैं। परमेश्वर के वचन में इस प्रकार की प्रार्थनाओं के विषय में उल्लेख नहीं किया गया है। जहां तक उल्लेख है सो पवित्र आत्मा में और बुद्धि से प्रार्थना करने का है। जब हमें प्रार्थना करना नहीं आता और हम अपनी गलती को स्वीकार करते तथा स्वयं को पवित्र आत्मा के हाथों में सौंप देते हैं, तब ऐसी घड़ी में पवित्र आत्मा प्रार्थना करने में हमारी सहायता करता है। क्योंकि वह हम विश्वासियों का सहायक है। (जकर्याह 2:10, रोमि० 8:15, गला० 4:16, रोमि० 8:26, प्रेरि० 9:11, इफि० 6:18, यहूदा 1:20, यूहन्ना 4:22-44, 1 कुरि० 14:15)

पवित्र आत्मा में प्रेरितों ने और कलीसिया ने प्रार्थना की। जिसका जीता-जागता उदाहरण प्रेरितों के काम की पुस्तक में मिलता है। इसलिए कि उन्होंने पवित्र आत्मा में प्रार्थनाएं की। उन्होंने उत्तर प्राप्त किया। जैसे-उनमें जागृति आयी, परिस्थितियां बदल गयीं, जेल के दरवाजे खुल गए, लोगों ने चंगाई प्राप्त की लोग उद्धार पाने लगे और कलीसियाएं तेजी से बढ़ने लगीं।

सावधानियाँः-

1. पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व व उसके कार्यों पर संदेह न करें।
2. जो व्यक्ति पवित्र आत्मा की सामर्थ्य में प्रार्थना कर रहा है उसका मजाक न उड़ाएं।
3. पवित्र आत्मा के विरोध में कोई पाप न करें।

Creation Autonomous Academy

अध्याय - 2

विभिन्न प्रकार की प्रार्थनाएं

पवित्रशास्त्र बाइबल में विभिन्न प्रकार की प्रार्थनाओं के उदाहरण हैं।-

1. पश्चातापी प्रार्थनाः-

''पश्चातापी प्रार्थना वह प्रार्थना है जिसमें हम परमेश्वर के सामने अपने सारे पापों को मान कर सच्चाई से आंसू बहाते तथा गिड़गिड़ाते हुए क्षमा मांगते हैं।''

उदाहरण के लिए दाऊद की प्रार्थना (भजन 51:17)

वही व्यक्ति गिड़गिड़ाकर पश्चातापी प्रार्थना कर सकता है जिसका मन टूटा और पीसा होता है। इस प्रकार टूटे और पीसे हुए मन को परमेश्वर तुच्छ नहीं जानता। यह भजनकार राजा दाऊद के स्वयं के जीवन का अनुभव है। नातान नबी से चेतावनी पाकर राजा दाऊद ने अपने व्यभिचार के पाप से पश्चाताप किया।

2. निजी प्रार्थना :-

''निजी प्रार्थना वह प्रार्थना है जिसमें कोई व्यक्ति अकेला प्रार्थना करता है। इस प्रकार की प्रार्थना में प्रार्थना करने वाले को पूर्ण स्वातन्त्रता होती है कि वह पवित्र आत्मा की अगुवाई में अन्य-अन्य भाषाओं में प्रार्थना कर सकता है। ये अन्य भाषाएं स्वर्गीय तथा मनुष्यों की बोलियां हो सकती हैं। इसलिए कि यह निजी प्रार्थना है, जिसे कोई व्यक्ति एकान्त में कर सकता है तथा स्वयं के जीवन में आत्मिक लाभ उठा सकता है।''

निजी प्रार्थना एकान्त में करने से हम परमेश्वर के साथ बिना किसी बाधा के बातचीत कर सकते हैं और ऐसी निजी प्रार्थनाओं से किसी दूसरे को भी बाधा या चोट नहीं पहुंचा सकते। निजी प्रार्थना करते समय आपको पूर्ण स्वतंत्रता होती है कि पवित्र आत्मा जैसी सामर्थ्य देता है आप अन्य-2 भाषाओं यहां तक कि स्वर्गदूतों की भाषाओं में भी परमेश्वर की स्तुति, आराधना व उससे प्रार्थनाएं कर सकते हैं। वे जो अन्य-2 भाषाओं पर विश्वास नहीं करतें उन्हें आलोचना करने का अवसर नहीं मिल पाता। पवित्रशास्त्र में लिखा है कि पवित्र आत्मा में प्रार्थना करते रहो। पवित्र आत्मा में प्रार्थना करने का मतलब उसकी अगुवाई में ऐसी भाषाओं में भी प्रार्थना करना होता है जिसे प्रार्थना करने वाला स्वयं न जानता हो। क्योंकि अन्य-2 भाषाओं में प्रार्थना करना पवित्र आत्मा परमेश्वर का एक वरदान है। इसलिए पवित्रआत्मा को अपने निजी प्रार्थना में पूर्ण स्वतन्त्रता देने के लिए हम एकान्त में प्रार्थना करें। जहां केवल हमारी प्रार्थना को परमेश्वर सुने, परन्तु कोई अन्य व्यक्ति न सुन सके। (1 कुरि० 14:4) एकान्त में प्रार्थना करने का उत्तम आदर्श प्रभु यीशु मसीह है। (मर० 1:35)

Creation Autonomous Academy

निजी प्रार्थना के लाभः-

- स्वयं की आत्मिक उन्नति होती है।(1 कुरि० 14:4)
- बहुत से गुप्त विषयों के लिए उपयुक्त है।

निजी प्रार्थना करने के द्वारा हमारी घनिष्ठता परमेश्वर के साथ बढ़ जाती है। उसके प्रति तथा दूसरों के प्रति प्रेम बढ़ जाता है। परमेश्वर के सेवा के प्रति उत्साह बढ़ जाता है। आत्मिक जीवन बलवन्त होने लगता है। तथा अपने कार्यों में भी मन लगने लगता है। इस प्रकार अपनी जिम्मेवारियों के प्रति विश्वासयोग्य बनने लगते हैं। जीवन से सूखापन दूर हो जाता है। एक चैन और विश्राम जीवन में प्रवेश करता है। दुःखों में भी सुख की प्राप्ति होती है।

सावधानियां :-

1. किसी दूसरे को बाधा न हो।
2. स्वयं को कोई बाधा न हो।
3. यह दिखावटी न हो।
4. आलस्य रहित हो।

3. सामूहिक प्रार्थना:-

"यह वह प्रार्थना है जिसे समूह में किया जाता है।"

सामूहिक प्रार्थना दो प्रकार की होती है।--

1. प्रतिनिधित्व की प्रार्थना।
2. सम्पूर्ण समूह का एक साथ मिलकर प्रार्थना करना।

प्रतिनिधित्व की प्रार्थना :-

इसमें कोई एक व्यक्ति प्रार्थना करते हुए पूरे समूह का प्रतिनिधित्व करता है। जब वह व्यक्ति प्रार्थना करता है तब पूरा समूह उसकी प्रार्थना को ध्यान से सुनता, समझता तथा सहमति देते हुए प्रार्थना की समाप्ति पर आमीन कहता है।

प्रतिनिधित्व की प्रार्थना के सम्बन्ध में सावधानियां:-

1. प्रार्थना करने वाला ऐसी आवाज में प्रार्थना करे जिसे पूरा समूह सुन सके।
2. प्रार्थना उस भाषा में की जाए जिसे पूरा समूह समझ सके और अन्त में सहमति देते हुए आमीन कह सके।
3. सभों के अन्य कार्यक्रमों के समय का ध्यान रखते हुए प्रार्थना की जाए।
4. प्रार्थना ऐसी न हो जिसे सुनने वाला नींद में झपकियां लेना शुरू कर दे।
5. प्रार्थना ऐसी न हो कि वह सामूहिक प्रार्थना एक निजी प्रार्थना में बदल जाए।

सम्पूर्ण समूह का एक साथ मिलकर प्रार्थना करना :-

इस प्रकार की प्रार्थना में सभी लोग एक साथ मिलकर प्रार्थना करते हैं। ऐसी प्रार्थना में यह आवश्यक नहीं है कि कोई जन दूसरे की प्रार्थना को सुने। सब एक साथ मिलकर अपनी -अपनी प्रार्थनाएं करते हैं। ऐसी प्रार्थना में अन्य भाषा में की जाने वाली प्रार्थना किसी दूसरे के लिए रूकावट या प्रश्न का कारण नहीं बन सकती।

Creation Autonomous Academy

सामूहिक प्रार्थना के लाभ :-

सामूहिक प्रार्थना के निम्नलिखित लाभ हैं।:-

1. पूरे समूह को एक दूसरे की आवश्यकताओं की जानकारी हो जाती है।
2. अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार प्रभु यीशु मसीह की उपस्थिति समूह के मध्य में होती है। इसी कारण प्रार्थना करने का हियाव बढ़ जाता है।
3. अनुशासन में बढ़ोत्तरी होती है।
4. यह उत्साह को बढ़ाती है।

5. एक मन हो कर प्रार्थना करने में सहायक होती है एवं इसका उत्तर अवश्य मिलता है।(प्रेरि० 4:29-31, 12:5)

4. पारिवारिक प्रार्थना :-

पारिवारिक प्रार्थना वह प्रार्थना है जिसमें परिवार के सभी सदस्य एक साथ मिलकर प्रार्थना करते हैं। ऐसी प्रार्थना सभी विश्वासियों के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

पारिवारिक प्रार्थना के लाभ :-

पारिवारिक प्रार्थना के निम्नलिखित लाभ हैं।

1. इससे परिवार में परमेश्वर को प्रथम स्थान मिलता है।
2. इससे परिवार में परमेश्वर की आशीषें आती हैं।
3. परिवार में एकता और आपसी प्रेम को बढ़ावा मिलता है।
4. इससे परिवार में अनुशासन होता है।
5. छोटे बच्चे अपने माता-पिता से प्रार्थना करना सीखते हैं।
6. इससे परिवार का आत्मिक विकास होता है।
7. यह समाज में एक गवाही का जरिया है।

पारिवारिक प्रार्थना के सम्बन्ध में सावधानियां:-

पारिवारिक प्रार्थना के सम्बन्ध में निम्नलिखित सावधानियां आवश्यक हैं।-

1. सरल शब्दों का प्रयोग करे जिसे छोटे बच्चे भी समझ सकें।
2. रटी हुई प्रार्थना न करें,बच्चों पर बुरा असर पड़ेगा।
3. छोटे बच्चों का ध्यान रखते हुए समय का उचित ध्यान रखें।
4. परिवार के सभी सदस्यों को प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहन दें।
5. पारिवारिक प्रार्थना की सही विधि का प्रयोग करें, अर्थात एक गीत गाते हुए, वचन भी पढ़ें और प्रार्थना करें।

जिन परिवारों में प्रार्थना की कमी पायी जाती है, वे परिवार आत्मिक रूप से कमजोर हो जाते हैं। उस परिवार का आत्मिक विकास रूक जाता है। यहां तक कि वे परमेश्वर की अनेक आशीषों से वंचित रह जाते हैं। यदि एक मसीही परिवार आत्मिक रूप से मजबूत है तो उसका अच्छा प्रभाव कलीसिया पर भी पड़ेगा और कलीसिया भी मजबूत होगी।

Creation Autonomous Academy

अध्याय -3

उपवास के साथ प्रार्थना

जहां एक ओर परमेश्वर के वचन में उपवास रखने पर बल दिया गया है, वहीं दूसरी ओर प्रार्थना करने पर भी बल दिया गया है। परमेश्वर के सामने उपवास रखते समय प्रार्थना करना अति आवश्यक है। उपवास रखना हमारे दृढ़ संकल्प को दर्शाता है। प्रार्थना करना परमेश्वर से बातें करना तथा मांग करना होता है। इसलिए यदि हम मात्र दृढ़ संकल्प करें परन्तु प्रार्थना न करें तो ऐसा दृढ़ संकल्प निरर्थक होगा। इसी प्रकार यदि केवल प्रार्थना करें तो प्रार्थना तो प्रभावशाली होगी, उसी के साथ यदि उपवास रख कर दृढ़ संकल्प कर लें तो ऐसी प्रार्थना और प्रभावशाली बन जाएगी।

उपवास रखते समय हमारा शरीर तो दुर्बल परन्तु हमारी आत्मा बलवन्त होती है। ऐसी दशा में परमेश्वर का आत्मा हमारी आत्मा के साथ मिलकर कार्य करता है। मत्ती 26:41 में लिखा है, ‘‘जागते रहो और प्रार्थना करते रहो कि तुम परीक्षा में न पड़ो। आत्मा तो तैयार है परन्तु देह दुर्बल है।’’ जब तक यहोवा मिल सकता है तब तक उसकी खोज में रहो, जब तक वह निकट है तब तक उसे पुकारो।(यशा० 55:6) माँगो तो तुम्हें दिया जाएगा, ढूँढ़ो तो तुम पाओगे, खटखटाओ तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा।(मत्ती 7:7) किसी भी बात की चिन्ता न करो, परन्तु प्रत्येक बात में प्रार्थना और निवेदन के द्वारा तुम्हारी विनती धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख प्रस्तुत की जाए। (फिलि० 4:6)

उपवास का दिन नियत करो, पवित्र सभा घोषित करो, प्राचीनों और देश के सब निवासियों को अपने परमेश्वर यहोवा के घर में एकत्रित करके उसकी दुहाई दो। (योएल 1:14)

परन्तु अभी भी यहोवा की यह वाणी है कि सम्पूर्ण हृदय से और उपवास के साथ रोते -पीटते हुए मेरी ओर फिरो। (योएल 2:12)

ऐसा हुआ कि इन बातों को सुनते ही मैं बैठकर रोने लगा और कई दिन तक विलाप करता और स्वर्ग के परमेश्वर के सम्मुख उपवास और प्रार्थना करता रहा। (नहे० 1:4)

अतः मैंने यहोवा की ओर अपना मुंह किया कि उपवास के साथ टाट पहनकर और राख में बैठकर तथा गिड़ गिड़ा कर प्रार्थना करते हुए उसकी खोज करूं। (दानि० 9:3)

जब वे उपवास तथा प्रार्थना कर चुके तो उन पर हाथ रख कर उन्हें भेज दिया। (प्रेरितों० 13:3)

जब वह चालीस दिन और चालीस रात उपवास कर चुका तब उसे भूख लगी। (मत्ती 4:2)

जब कभी तुम उपवास करो तो पाखण्डियों के समान उदास न दिखाई दो क्योंकि वे अपना मुंह म्लान बनाए रहते हैं जिससे कि मनुष्यों को उपवासी दिखाई दें। मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि वे अपना पूरा-पूरा प्रतिफल पा चुके। परन्तु जब तू उपवास करे तो अपने सिर पर तेल लगा और मुंह धो, जिससे कि तू मनुष्यों को उपवासी दिखाई न दे, परन्तु अपने स्वर्गीय पिता को जो गुप्त में है और तेरा पिता जो गुप्त में देखता है तुझे प्रतिफल देगा।(मत्ती 6:16-18)

Creation Autonomous Academy

उपवास का गलत उपयोग न करें।:--

1 राजा 21:9-13 में हम देखते हैं कि इजेबेल ने उपवास का गलत उपयोग किया। उसने उपवास का सहारा ले कर नाबोत की हत्या करवा दी। इस उपवास में प्रार्थना नहीं थी। इस उपवास का उद्‌देश्य नाबोत की हत्या करवाना था। उपवास का गलत उपयोग करना परमेश्वर के सामने पाप है।

यशा० 58:3-8 को पढ़ने से कारण का पता चलता है कि हम उपवास तो रखते हैं परन्तु हमारी विनती नहीं सुनी जाती है। जब हम उपवास रखते है तो हमारी प्रार्थना ऊपर इसलिए नहीं सुनायी देती है क्योंकि हम उपवास के दिन अपनी ही इच्छा पूरी करते हैं और अपने सेवकों से कठिन कार्यो को कराते हैं। हमारे उपवास रखने का कुछ और ही उद्‌देश्य होता है। हमारे उपवास रखने का फल यह होता है कि हम उपवास में लड़ते और झगड़ते और दुष्टता से घूँसे मारते हैं। इसलिए हमारी प्रार्थनाएं ऊपर नहीं सुनायी देती हैं।

डॉ० जैक फोमस के अनुसार उपवास के सम्बन्ध में कुछ टिप्पणियाँ :-

उपवास की परिभाषा :-

“प्रभु के साथ गहरी सहभागिता रखने तथा अपनी आत्मिक सामर्थ में नवीनीकरण के उद्देश्य से जानबूझकर स्वयं को भोजन से अलग रखना उपवास कहलाता है।”

परमेश्वर की सामर्थ वहीं काम करती है जहां प्रार्थना रूपी पटरी हो। उपवास वह तेल है जो पुर्जों में चिकनाई लाता है। उपवास रखने से परमेश्वर की सामर्थ प्रार्थना में आराम से कार्य करती है। प्रार्थना और उपवास के बिना परमेश्वर की सामर्थ हमें नहीं मिल सकती है।

उपवास परमेश्वर के ट्रेन को गतिशील बनाने में सहायक है। उपवास हमारे जीवन को परमेश्वर के सामर्थ्य के अन्तर्गत आगे बढ़ने में सहायक है। कुछ ऐसी बातें हैं जिन्हें परमेश्वर उस समय तक नहीं करेगा जब तक कि उसकी संतान उपवास सहित प्रार्थना न करें। उपवासी उपवास में यह अनुभव करता है कि मानों उसने सब कुछ पूरा कर लिया है। इसलिए वह यही सोचता है कि परमेश्वर आवश्यक रूप से उस कार्य को अपनी ईश्वरीय शक्ति से करे। बाइबल में उपवास रखने के उदाहरण हैं।

उपवास क्यों आवश्यक है?:--

1. पश्चाताप करने के लिए । (नहे० 9:1-3, योएल 1:13-14, 2:15-17, न्योयियों 20:26)
2. स्वयं को नम्र और दीन बनाने के लिए। (एज्रा 8:21-23)
3. युद्ध की परिस्थिति को बदलने के लिए । (2 इति० 20:3-4, 6-12,15, 22-24)
4. परमेश्वर से भेंट करने की तैयारी के लिए। (1 राजा 19 अध्याय)
5. परमेश्वर के मन को बदलने के लिए। (योना 3 अध्याय)
6. आत्मिक अवरोधों को तोड़ने के लिए। (दानि० 10:2-15)
7. आत्मिक सामर्थ्य पाने के लिए। (दानि० 9:3,17-19, लूका 4:1-14)

प्रभु यीशु ने आत्मिक सामर्थ्य पाने के लिए उपवास रखा। सेवा करने से पूर्व आत्मिक सामर्थ्य पाने के लिए पौलुस ने भी उपवास रखा।(प्रेरि० 9:9) उपवास रखना प्रभु की आराधना व उपवास करना है।(प्रेरि० 13:22) उदाहरण के लिए हन्ना भविष्यद्वक्तिन (लूका 2:36-37) प्रेरित० 13:1-3 में अन्ताकिया की कलीसिया के अगुवे उपवास रखकर प्रभु की उपासना कर रहे थे। उपवास रखना खुशी के पूर्व के समान है।(जकर्याह 8:18-19)

उपवास के प्रकार :-

वचन में तीन प्रकार के उपवासों का वर्णन किया गया है।--

Creation Autonomous Academy

1. पूर्णरूप से उपवास रखना:-

इसका अर्थ है कुछ भी न खाना न पीना। इस तरीके का उपवास मूसा, नीनवे के लोग और प्रभु यीशु ने रखा। सुझाव दिया जाता है कि इस तरीके का उपवास 72 घन्टों से अधिक न हो। (मत्ती 4:4, लूका 4:1, योना 3:5-10, निर्ग० 34:28)

2. मात्र पानी को छोड़कर पूर्ण रूप से :-

इस प्रकार के उपवास में पानी को छोड़कर न तो कोई चीज खायी जा सकती है और न ही पी जा सकती है। ऐसा उपवास अधिकतर विश्वासी लोग करते हैं। इस प्रकार का उपवास लगभग 40 दिनों तक रखा जा सकता है।

3. अपूर्ण उपवास :-

इस प्रकार के उपवास में साधारण व हल्का भोजन कर सकते हैं। चिकने भोजन नहीं कर सकते हैं। दानिय्येल ने तीन सप्ताहों के लिए इस प्रकार का उपवास रखा था। इस प्रकार का उपवास कई सप्ताहों तक रखा जा सकता है। (दानि० 10:2)

सावधानियां :-

उपवास तोड़ते समय हमें कुछ सावधानियां वरतनी चाहिए--

1. आराधना व स्तुति करते हुए उपवास तोड़ें।
2. एक गिलास फल का रस लें।
3. कुछ समय के पश्चात दलिया लें।
4. उपवास तोड़ने के बाद इस बात पर ध्यान करें कि भोजन सादा व हल्का हो। पेट भर न खाएं। धीरे-२ करके कठोर भोज्य पदार्थ ले सकते हैं।
5. जो आत्मिक स्तर उपवास सहित प्रार्थना के समय था वही आगामी दिनों में बनाए रखने का प्रयत्न करें।

Creation Autonomous Academy

अध्याय -4

प्रार्थना के महान योद्धा

बाइबल में प्रार्थना के महान योद्धाओं का वर्णन मिलता है। इन सबने अपने जीवनों में प्रार्थना को महत्वपूर्ण स्थान दिया। यद्यपि उनके पास दुनियावी जिम्मेवारियां थीं, फिर भी उन्होंने समय निकालकर प्रार्थनाएं की।

पुराना नियम के प्रार्थना के योद्धा :-

पुराने नियम में प्रार्थना के अनेक योद्धा हैं जिनमें से कुछ प्रमुख प्रार्थना योद्धाओं का अध्ययन हम करेंगे।

1. इब्राहीम :-

इब्राहीम परमेश्वर से प्रार्थना करने वाला व्यक्ति था। उसने व्यक्तिगत प्रार्थना के साथ-साथ मध्यस्थता की प्रार्थना भी की थी।

Creation Autonomous Academy

क- व्यक्तिगत प्रार्थना :-

इब्राहीम ने बेत-एल में यहोवा से प्रार्थना की। (उत्पत्ति 13 अध्याय)) इब्राहीम ने परमेश्वर से वार्तालाप किया। (उत्पत्ति 15 अध्याय)

इन बातों के पश्चात यहोवा का यह वचन दर्शन में अब्राम के पास पहुंचा, ‘‘अब्राम, मत डर, मैं तेरी ढाल हूं, तेरा प्रतिफल अति महान होगा।’’

अब्राम ने कहा, ‘‘हे प्रभु यहोवा, तू मुझे क्या देगा? मैं तो निर्वंश हूं और मेरे घर का उत्तराधिकारी दमिश्क का एलीएजेर होगा।’’ ‘‘इसलिए कि तू ने मुझे कोई सन्तान नहीं दी है, मेरे घर में उत्पन्न एक जन मेरा उत्तराधिकारी होगा।’’

तब देखो यहोवा का वचन उसके पास पहुंचा, ‘‘यह मनुष्य तेरा उत्तराधिकारी न होगा; परन्तु जो तुझ से उत्पन्न होगा वही तेरा उत्तराधिकारी होगा।’’ और बाहर ले जाकर उसने उससे कहा, ‘‘अब आकाश की ओर देख और यदि गिन सके तो तारों को गिन।’’ फिर उसने कहा ‘‘तेरा वंश भी ऐसा ही होगा।’’

तब उसने यहोवा पर विश्वास किया और इसे यहोवा ने उसके लिए धार्मिकता गिना।

उसने उससे कहा, ‘‘मैं यहोवा हूं जो तुझे कसदियों के ऊर देश से निकाल लाया हूं कि तुझे इस देश का अधिकार दूं।’’

उसने कहा, ‘‘हे प्रभु यहोवा, मैं कैसे जानूं कि इस भूमि पर मेरा अधिकार हो जाएगा?’’

तब उसने कहा, ‘‘मेरे लिए तीन वर्ष की कलोर, तीन वर्ष की बकरी, तथा तीन वर्ष का मेढ़ा, एक पिण्डुक और कबूतर का एक बच्चा ले आ।’’

तब वह उन सबको उसके पास लाया और उनको दो-दो टुकड़ों में काटकर आमने-सामने रखा परन्तु उसने चिड़ियों को नहीं काटा। तब मांसाहारी पक्षी मांस के टुकड़ों पर झपटे तो अब्राम ने उन्हें उड़ा दिया। जब सूर्यास्त होने लगा तो अब्राम को गहरी नींद ने आ घेरा; और देखो, अत्यन्त भय और गहन अन्धकार उस पर छा गया।

तब परमेश्वर ने अब्राम से कहा, ‘‘निश्चयपूर्वक जान ले कि तेरे वंशज एक ऐसे देश में परदेशी हो कर रहेंगे जो उनका नहीं है, जहां उन्हें चार सौ वर्ष तक दासत्व में रहना और दुःख सहना होगा। परन्तु मैं उस देश को दण्ड भी दूंगा जिसके दासत्व में वे रहेंगे; उसके पश्चात वे बहुत-सा धन लेकर निकल आएंगे। परन्तु तू तो शान्तिपूर्वक अपने पूर्वजों के पास जाएगा; तुझे पूर्ण वृद्धावस्था में मिट्टी दी जाएगी। तब चौथी पीढ़ी में वे फिर यहां लौट आएंगे, क्योंकि एमोरियों का अधर्म अब तक पूरा नहीं हुआ है।’’ और ऐसा हुआ जब सूर्यास्त हो गया तथा घोर अन्धकार छा गया तो देखो, धुंआ देती हूई एक अंगीठी और जलती हुई एक मशाल दिखायी दी जो उन मांस के टुकड़ों के बीच में से होकर निकल गयी। उसी दिन यहोवा ने अब्राम से यह कहकर वाचा बांधी, ‘‘मिस्र की नदी से लेकर महानदी अर्थात फरात नाम नदी तक की जितनी भूमि है, अर्थात केनियों, कनिज्जियों, कदमोनियों, हित्तियों, परिज्जियों, रपाइयों और एमोरियों, कनानियों, गिर्गाशियों तथा यबूसियों के देश की समस्त भूमि मैंने तेरे वंशजों को दे दी है।’’

ख- मध्यस्थता की प्रार्थना :-

सदोम और अमोरा के पाप के कारण परमेश्वर ने उन्हें नष्ट करने का निर्णय लिया। इब्राहीम परमेश्वर यहोवा के सम्मुख खड़ा था। तब उसने धर्मीजनों को बचाने की परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना किया।

इब्राहीम ने समीप आकर कहा, ‘‘क्या तू सचमुच दुष्टों के साथ धर्मियों का भी नाश करेगा? कदाचित नगर में पचास धर्मीजन हों, क्या फिर भी तू उन्हें नाश कर देगा? क्या उन पचास धर्मियों को जो उसमें हैं बचाने के लिए उस स्थान को सुरक्षित न छोड़ेगा? यह बात तुझसे दूर रहे कि दुष्टों के साथ धर्मियों को नाश करके धर्मियों और दुष्टों को एक समान करे। ऐसा करना तुझसे दूर रहे। क्या समस्त पृथ्वी का न्यायी उचित न्याय न करे? तब यहोवा ने कहा, ‘‘यदि मुझे सदोम नगर में पचास धर्मी ही मिल जाएं तो मैं उनके कारण सारे स्थान को छोड़ दूंगा।’’ इब्राहीम ने उत्तर देते हुए कहा, ‘‘देख यद्यपि मैं धूल और राख सदृश हूं फिर भी मैं प्रभु से बात करने का साहस कर रहा हूं। यदि उन पचास धर्मियों में से पांच कम हो जाएं तो क्या तू उन पांच के कारण सारे नगर को नाश करेगा? उसने कहा, ‘‘यदि मुझे वहां पैंतालीस ही मिल जाएं तो नाश न करूंगा।’’ उसने फिर उससे कहा, यदि वहां चालीस ही मिलें तो?’’ उसने कहा, ‘‘मैं उन चालीस के कारण भी ऐसा नहीं करूंगा।’’ तब उसने कहा, ‘‘हे प्रभु, तू क्रोधित न हो तो मैं आगे कहूं, यदि वहां तीस मिलें तो?’’ और उसने कहा, ‘‘यदि मैं वहां तीस ही पाऊं तो ऐसा नहीं करूंगा।’’ और उसने कहा, ‘‘देख, मैंने अपने प्रभु से बात करने का साहस किया है; यदि वहां बीस ही मिलें तो?’’ उसने कहा, ‘‘मैं उन बीस के कारण उसको नष्ट नहीं करूंगा।’’ तब उसने कहा, ‘‘हे प्रभु, यदि तू क्रोध न करे तो मैं अंतिम बार कहूंगा, कदाचित वहां दस ही मिलें तो?’’

Creation Autonomous Academy

उसने कहा, ‘‘मैं उन दस के कारण भी उसको नष्ट नहीं करूंगा।’’ इब्राहीम से बात पूरी करके यहोवा वहां से चला गया और इब्राहीम अपने स्थान पर लौट आया। (उत्पत्ति 18:22-33)

2. मूसा :-

मूसा का जीवन प्रार्थना का जीवन था। उसकी प्रार्थनाएं अधिकतर व्यक्तिगत न होकर मध्यस्थता की होती थीं। उसने परमेश्वर की प्रजा इस्राएलियों के लिए प्रार्थनाएं की।

इस्राएलियों ने यात्रा करते हुए रपीदीम में डेरे खड़े किए। वहां उन्हें पीने के लिए पानी न मिला। इसलिए इस्राएली मूसा से झगड़ा करके कहने लगे, ‘‘हमें पीने के लिए पानी दे।’’ और मूसा ने उनसे कहा, ‘‘तुम मुझसे क्यों झगड़ते हो? तुम यहोवा की परीक्षा क्यों करते हो?’’ परन्तु वहां उन लोगों को प्यास लगी और उन्होंने मूसा के विरूद्ध कुड़कुड़ाते हुए कहा, ‘‘तू हमें बाल-बच्चों और पशुओं समेत प्यासा मार डालने के लिए मिस्र से क्यों ले आया है?’’ तब मूसा ने यहोवा की दुहाई दी और कहा? ‘‘मैं इन लोगों से क्या करूं? ये सब तो मेरा पथराव करने को ही तैयार हैं।’’ तब यहोवा ने मूसा से कहा, ‘‘इस्राएल के वृद्ध लोगों में से कुछ को अपने साथ ले और जिस लाठी से तूने नील नदी को मारा था, उसे अपने हाथ में लेकर इन लोगों के आगे बढ़ जा। देख, मैं तेरे सामने होरेब पहाड़ पर खड़ा होऊंगा। और तू चट्टान पर मारना और उसमें से पानी निकलेगा जिससे कि लोग पिएं।’’ (निर्ग० 17:1-6)

फिर वे लोग यहोवा के सुनते कुड़कुड़ाने लगे और जब यहोवा ने यह सुना तब उसका क्रोध भड़क उठा और यहोवा की आग उनके बीच जल उठी और छावनी को किनारे किनारे भस्म करने लगी। तब लोगों ने मूसा से चिल्लाकर विनती की और मूसा ने यहोवा से प्रार्थना की और आग बुझ गयी। और उस स्थान का नाम तबेरा पड़ा, क्योंकि यहोवा की आग उन पर जल उठी थी।

और जो मिली-जुली भीड़ उनके साथ थी उसमें लालसा भड़क उठी और इस्राएली फिर रोने लगे और कहने लगे कि हमें मांस खाने को कौन देगा? हमें मिस्र की वे मछलियां याद हैं जो हम मुफ्त में खाया करते थे और खीरे और तरबूज और गन्दने और प्याज और लहसुन भी, परन्तु अब तो हमारा जी ऊब गया है, मन्ना के सिवाय हमें यहां और कुछ दिखायी नहीं देता। मन्ना तो धनिए के बीज के समान था और उसका रूप तो मोती के समान। लोग इधर-उधर जाकर उसे बटोरते और चक्की में पीसते थे अथवा ओखली में कूटकर तसले में उबालते और रोटियां बनाते थे, और उसका स्वाद तेल में तली हुई रोटी के समान था। जब रात में छावनी में ओस गिरती थी, तब मन्ना भी उसके साथ गिरता था।

तब मूसा ने हर एक परिवार के लोगों को अपने-अपने डेरे के द्वार पर रोते हुए सुना, और यहोवा का क्रोध अत्यन्त भड़क उठा, और मूसा को भी यह बुरा लगा। तब मूसा ने यहोवा से कहा, ‘‘तू अपने दास पर क्यों इतना कठोर हो गया है? मैंने तेरी दृष्टि में क्यों अनुग्रह नहीं पाया जो तूने इस सारी प्रजा का बोझ मुझ पर लाद दिया है? क्या ये मेरे गर्भ में थे? क्या मैंने ही उनको उत्पन्न किया, जो तू कहता है कि जैसे धाय दूध पीते बालक को अपनी गोद में लिए फिरती है वैसे ही मैं इन लोगों को अपनी गोद में लेकर उस देश में पहुंचाऊं जिसे देने की शपथ तू ने उनके पूर्वजों से खाई है? इन सब लोगों को खिलाने के लिए मुझे इतना मांस कहां से मिलेगा? क्योंकि वे मेरे समक्ष रो-रोकर कहते हैं, ‘हमें मांस खाने को दे।’ मैं अकेला इन सब लोगों को नहीं सम्भाल सकता, क्योंकि यह बोझ मेरे लिए बहुत भारी है। यदि तू मुझ से ऐसा ही व्यवहार करना चाहता है और यदि तेरा अनुग्रह मुझ पर हो तो मुझे शीघ्र ही मार डाल, जिससे कि मैं अपनी दुर्दशा देख न पाऊं।’’

तब यहोवा ने मूसा से कहा, ‘‘इस्राएली प्राचीनों में से मेरे लिए सत्तर पुरूष जिनको तू जानता है कि वे प्रजा के प्राचीन और अगुवे हैं, इकट्ठा कर और उन्हें मिलाप वाले तम्बू के पास ले आ और वे तेरे साथ वहीं खड़े हों। तब मैं उतर कर वहां तुझ से बात करूंगा और जो आत्मा तुझमें है उसमें से कुछ लेकर उनमें डाल दूंगा, और वे तेरे साथ लोगों का बोझ उठायेंगे जिससे कि तुझे अकेले ही उठाना न पड़े। और इन लोगों से कह, ‘अपने आपको कल के लिए पवित्र

Creation Autonomous Academy

करो और तुम्हें खाने को मांस मिलेगा, क्योंकि तुम यह कहकर यहोवा के सुनते हुए रोए हो कि हमें मांस खाने को कौन देगा, क्योंकि हम तो मिस्र ही में भले थे। इसलिए यहोवा तुमको मांस देगा, और तुम खाओगे। तुम एक या दो दिन, या पांच या दस या बीस दिन नहीं, वरन महीने भर खाते रहोगे, जब तक वह तुम्हारे नथनों से निकलने न लगे और तुम उससे घृणा न करने लगो, क्योंकि तुमने यहोवा का तिरस्कार किया है जो तुम्हारे मध्य में है और उसके सुनते हुए रो-रोकर यह कहा है कि हमने क्यों मिस्र देश को छोड़ दिया ?'' पर मूसा ने कहा , ''जिन लोगों के मध्य मैं रहता हूँ उनमें छः लाख तो प्यादे ही हैं और फिर भी तूने कहा है कि मैं उन्हें इतना मांस दूंगा कि वे महीने भर खाते रहेंगे। क्या उनके लिए भेंड़-बकरियों और गाय बैलों के झुण्ड काटे जाएं कि उनके लिए पर्याप्त हों? अथवा समुद्र की सारी मछलियां उनके लिए इकट्ठी की जाएं कि उनके लिए पर्याप्त हो।'' तब यहोवा ने मूसा से कहा, ''क्या यहोवा का हाथ छोटा हो गया है? अब तू देखेगा कि जो मैंने तुझसे कहा है वह पूरा होता है या नहीं।''

तब मूसा ने बाहर जाकर सब लोगों को यहोवा की बातें सुना दीं, और उसने प्रजा के प्रचीनों में से सत्तर-पुरूषों को भी इकट्ठा किया और उन्हें तम्बू के चारों ओर खड़ा कर दिया। तब यहोवा बादल में से होकर उतरा और उससे बोला, और उस आत्मा में से जो मूसा पर था कुछ लेकर उन सत्तर प्राचीनों पर डाल दिया, और ऐसा हुआ कि जब आत्मा उनमें समाया तब; वे नबूवत करने लगे, पर बाद में उन्होंने फिर कभी नबूवत नहीं की।

परन्तु दो पुरूष छावनी में ही रह गए थे। उनमें से एक का नाम एलदाद और दूसरे का मेदाद था और आत्मा उनमें भी समाया ये तो उनमें से थे जिनके नाम लिख लिए गए थे परन्तु वे तम्बू के पास नहीं गए थे-और वे छावनी में ही नबूवत करने लगे। तब एक जवान ने मूसा के पास दौड़कर उसे बताया, ''एलदाद और मेदाद छावनी में नबूवत कर रहे हैं।'' तब नून के पुत्र यहोशू ने जो युवावस्था से मूसा का सेवक था, मूसा से कहा, ''हे स्वामी मूसा, उन्हें रोक दे।'' पर मूसा ने उससे कहा, ''क्या तुझे मेरे कारण जलन होती है? अच्छा होता कि यहोवा की सारी प्रजा के लोग नबी होते और यहोवा अपना आत्मा उन में डाल देता।'' तब मूसा इस्राएल के प्राचीनों के साथ छावनी में लौट आया।

अब यहोवा की ओर से एक बड़ी आँधी चली और समुद्र से बटेरें उड़ा लाई और उन्हें छावनी के चारों ओर इधर-उधर एक दिन के मार्ग तक भूमि की सतह से लगभग दो हाथ की ऊँचाई तक छावनी पर गिरा दिया। और लोग उठे और दिन भर और रात भर और दूसरे दिन भी बटेरें बटोरते रहे। किसी ने दस होमेर से कम नहीं बटोरा और उन्होंने उन्हें छावनी के चारों ओर फैला दिया। और जब मांस उनके मुंह में ही था और वे उसे चबा भी न पाए थे तभी यहोवा का क्रोध उन पर भड़क उठा और यहोवा ने उन्हें भयानक महामारी से मार डाला। और उस स्थान का नाम क्रिब्रोथ-हन्तावा पड़ा, क्योंकि जिन लोगों ने लालच किया था उनको वहां मिट्टी दी गयी। (गिनती 11:1-34)

तब अमालेकी आए और रपीदोम में इस्राएलियों से लड़ने लगे। तब मूसा ने यहोशू से कहा, ''हमारे लिए पुरूषों को चुन ले और जाकर अमालेकियों से लड़। कल मैं परमेश्वर की लाठी लिए हुए पहाड़ी की चोटी पर खड़ा रहूंगा।'' और जैसा मूसा ने यहोशू से करने को कहा था वैसा ही उसने किया और अमालेकियों से लड़ने लगा तथा मूसा, हारून और हूर, पहाड़ी की चोटी पर चढ़ गए। फिर ऐसा हुआ कि जब तक मूसा अपना हाथ ऊपर उठाये रहता तब तक इस्राएल प्रबल होता, और जब वह अपना हाथ नीचे करता तो अमालेक प्रबल होता था। परन्तु जब मूसा के हाथ भारी हो गये तब उन्होंने उसके नीचे एक पत्थर रख दिया और वह उस पर बैठ गया। और हारून और हूर ने एक-एक ओर खड़े होकर उसके हाथों को सहारा दिया। इस प्रकार उसके हाथ सूर्यास्त तक स्थिर रहे। अतः यहोशू ने अमालेकियों और उसके लोगों को तलवार की धार से पराजित किया।(निर्ग० 17:8-13)

Creation Autonomous Academy

3. दानिय्येल :-

दानिय्येल का जीवन प्रार्थना का जीवन था।

दानिय्येल ने घर जाकर अपने साथी हनन्याह, मीशाएल और अजर्याह को इस बात के विषय में बताया, कि वे इस भेद के सम्बन्ध में स्वर्ग के परमेश्वर से प्रार्थना करें जिससे दानिय्येल और उसके साथी बेबीलोन के अन्य पण्डितों

सहित नाश न किए जाएं। तब रात को दर्शन में वह भेद दानिय्येल पर प्रकट कर दिया गया और दानिय्येल ने यह कहकर स्वर्ग के परमेश्वर का धन्यवाद किया: ''परमेश्वर का नाम अनन्तकाल तक धन्य हो क्योंकि बुद्धि और शक्ति उसी की है। समयों और युगों को वही बदलता है, वही राजाओं को हराता और स्थापित करता है और बुद्धिमानों को बुद्धि और ज्ञानवन्त को ज्ञान प्रदान करता है। गूढ़ और गुप्त बातों को वही प्रकट करता है, और जो कुछ अन्धकार में है उसे जानता है, तथा प्रकाश उसी के साथ है। हे मेरे पूर्वजों के परमेश्वर, मैं तेरी स्तुति और बड़ाई करता हूं क्योंकि तूने मुझे बुद्धि और शक्ति दी है और अभी भी जो कुछ हमने तुझसे मांगा उसे तूने मुझ पर प्रकट किया। तू ने हमें राजा की बात बताई है।(दानि० 2:17-23)

मादी क्षयर्ष का पुत्र दारा जो कसदियों के देश पर राजा ठहराया गया था उसके प्रथम वर्ष में अर्थात उसके राज्य के प्रथम वर्ष में मुझ दानिय्येल ने शास्त्रों में यिर्मयाह नबी पर यहोवा द्वारा प्रकट किए गए वचन के अनुसार यरूशलेम के उजाड़ पड़े रहने के वर्षों की संख्या पर ध्यान दिया जो सत्तर वर्ष की थी। अतः मैंने यहोवा परमेश्वर की ओर अपना मुंह किया कि उपवास के साथ, टाट पहनकर और राख में बैठ कर तथा गिड़-गिड़ाकर प्रार्थना करते हुए उसकी खोज करूं। और मैंने अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना की। मैंने अपने पापों का अंगीकार करके कहा, ''हे प्रभु, हाय! तू महान और भययोग्य परमेश्वर है जो अपने प्रेम रखने वालों और आज्ञा मानने वालों के साथ अपनी वाचा पूरी करके करूणा करता है। हमने तो पाप, अपराध, दुष्टता और बलवा किया है और तेरी आज्ञाओं तथा विधियों से दूर हट गए हैं। और हमने तेरे सेवकों अर्थात् नबियों की नहीं सुनी, जिन्होंने तेरे नाम से हमारे राजाओं, उच्चाधिकारियो, पूर्वजों और देश के सब लोगों से बातें की। हे प्रभु, धार्मिकता तो तेरी है परन्तु आज हमारे लिए भारी लज्जा है अर्थात् यरूशलेम में निवास करने वाले सब यहूदियों के लिए तथा दूर और पास के सब इस्राएलियों के लिए जिन्हें तूने अपने प्रति किए गए विश्वासघात के कार्यों के कारण देश-देश में तितर-बितर कर दिया है। हे यहोवा, हम सब अर्थात हमारे राजा, प्रधान और पूर्वज अत्यन्त लज्जित हैं, क्योंकि हमने तेरे विरूद्ध पाप किया है। परन्तु यद्यपि हमने उसके विरूद्ध बलवा किया है, फिर भी हमारा प्रभु परमेश्वर दयालू और क्षमाशील है। हम तो अपने परमेश्वर यहोवा की वाणी सुनकर भी उसकी शिक्षा पर नहीं चले जिसे उसने अपने दासों अर्थात नबियों द्वारा हमको दी। निश्चय सब इस्राएली तेरी व्यवस्था का उल्लंघन करके और तेरी न सुनकर तुझसे अलग हो गए हैं। इसलिए परमेश्वर के दास मूसा की व्यवस्था में वर्णित शपथ और शाप हम पर आ पड़ा है। इस प्रकार उसने उन वचनों को हम पर बड़ी विपत्ति डाल कर पूरा किया है जो उसने हमारे और हमारे अधिकारियों के विरूद्ध कहे थे, यहां तक कि जैसी विपत्ति यरूशलेम पर पड़ी है वैसी सारी धरती पर कभी नहीं पड़ी। और जैसा मूसा के व्यवस्था में लिखा है, वैसे ही वह विपत्ति हम पर आ पड़ी है, फिर भी हम न तो अपने अधर्म के कामों से फिरे और न हमने तेरे सत्य पर ध्यान दिया कि अपने परमेश्वर यहोवा को प्रसन्न करते। इस कारण यहोवा ने नियत विपत्ति को हम पर उण्डेल दिया है। हमारे परमेश्वर यहोवा ने जो-जो कार्य किए हैं उन सब में वह धर्मी रहा है, पर हमने उसकी न सुनी। हे हमारे परमेश्वर, हे प्रभु, जिसने अपनी प्रजा को मिस्र देश से बलवन्त हाथ के द्वारा निकालकर अपना ऐसा बड़ा नाम किया जो आज तक प्रसिद्ध है, पर हमने तो पाप करके दुष्टता की है। हे प्रभु, अपने सब धर्ममय कार्यों के अनुसार अपने क्रोध और जलजलाहट को अपने नगर यरूशलेम अर्थात अपने पवित्र पर्वत पर से हटा ले, क्योंकि हमारे पापों और हमारें पूर्वजों के अधर्मों के कारण यरूशलेम तेरी प्रजा आस-पास के सब लोगों के सामने निन्दा का पात्र बन गयी है। अतः हे हमारे परमेश्वर, अपने दास की विनती और गिड़गिड़ाहट को सुन और हे प्रभु, अपने नाम के निमित्त अपने उजड़े हुए पवित्र स्थान पर अपने मुख का प्रकाश चमका। हे मेरे परमेश्वर, अपना कान हमारी ओर लगा और सुन! अपनी आंखें खोलकर हमारी उजाड़ दशा को देख और उस नगर को जो तेरे नाम से कहलाता है। हम तो अपनी किसी योग्यता के कारण नहीं, पर तेरी बड़ी दया के कारण तुझसे अनुनय-विनय कर रहे हैं। हे प्रभु, सुन ले! हे प्रभु, क्षमा कर ! हे प्रभु, सुन और कार्य कर ! हे मेरे परमेश्वर, अपने निमित्त बिलम्ब न कर क्योंकि तेरा नगर और तेरी प्रजा तेरे ही नाम से कहलाती है।'' (दानि० 9:1-19)

Creation Autonomous Academy

4. नहेमायाह :-

यरूशलेम की दुर्दशा को सुनकर नहेमायाह रोया, बिलाप किया और परमेश्वर के सम्मुख उपवास व प्रार्थना करता रहा।

''हे स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा, हे महान और भयोग्य परमेश्वर, तू जो अपने प्रेम रखने और आज्ञापालन करने वालों के लिए अपनी वाचा पूरी करता और उन पर करूणा करता, मैं तुझसे विनती करता हूं, तेरे कान अब ध्यान दें और तेरी आंखें खुली रहें कि मैं तेरा दास जो प्रार्थना इस समय तेरे सम्मुख तेरे दास इस्राएलियों के लिए दिन और रात करता हूं, उसे तू सुन ले। मैं इस्राएलियों के उन पापों का जो हम लोगों ने तेरे विरूद्ध किए हैं, अंगीकार करता हूं। मैं और मेरे पिता के घराने दोनों ने पाप किया है।

हमने तेरे विरूद्ध बहुत ही अधर्म का व्यवहार किया है कि उन आज्ञाओं, विधियों और नियमों का पालन नहीं किया, जिनकी आज्ञा तूने अपने दास मूसा को दी थी, उस वचन को स्मरण कर जिसकी आज्ञा तूने अपने दास मूसा को दी थी, 'यदि तुम लोग विश्वासघात करोगे तो मैं तुमको देश-देश के लोगों में तितर-बितर कर दूंगा। परन्तु यदि तुम मेरी ओर फिरो और मेरी आज्ञाओं को मान कर उनका पालन करो, तो मैं तुम से तितर-बितर किए हुए लोगों को आकाश के छोर से भी इकट्ठा करके उस स्थान में पहुंचाऊंगा जिसे मैंने अपने नाम के निवास के लिए चुन लिया है। वे तेरे दास और तेरी प्रजा के लोग हैं जिनको तूने अपने महान सामर्थ्य और बलवन्त हाथ के द्वारा छुड़ा लिया है। हे प्रभु, मैं तुझसे विनती करता हूं कि तू अपने दास की ओर तथा अपने उन दासों की प्रार्थना पर, जो तेरे नाम का भय मानने से आनन्दित होते हैं, कान लगा और आज अपने इस दास का काम सफल कर और इसके प्रति उस मनुष्य के हृदय में दया उत्पन्न कर।'' (नहेमायाह 1:4-11)

नया नियम में प्रार्थना के योद्धा :-

प्रभु यीशु मसीह :-

सम्पूर्ण बाइबल में प्रार्थना के सबसे महान योद्धा प्रभु यीशु मसीह हैं। उन्होंने अपने स्वयं के जीवन द्वारा सभों को प्रार्थना के जीवन का एक सर्वोत्तम नमूना दिया है।

1. निजी प्रार्थना(मत्ती 26:36-44):-

यीशु चेलों के साथ गतसमनी नामक स्थान में आया और उसने अपने चेलों से कहा, ''जब तक मैं वहां जा कर प्रार्थना करता हूं, तुम यहीं बैठो।'' उसने अपने साथ पतरस और जब्दी के दोनों पुत्रों को लिया और व्यथित तथा व्याकुल होने लगा। फिर उसने उनसे कहा, ''मेरा मन बहुत उदास है, यहां तक कि मैं मरने पर हूं। यहीं ठहरो और मेरे साथ जागते रहो।'' फिर वह उनसे थोड़ा आगे बढ़ा और मुंह के बल गिरकर यह प्रार्थना करने लगा; ''हे मेरे पिता, यदि सम्भव हो तो यह प्याला मुझसे टल जाए। फिर भी मेरी नहीं, पर तेरी इच्छा पूरी हो।''

तब वह चेलों के पास आया और उन्हें सोते पाकर उसने पतरस से कहा, ''क्या तुम लोग मेरे साथ एक घड़ी भी न जाग सके? जागते रहो और प्रार्थना करते रहो कि तुम परीक्षा में न पड़ो। आत्मा तो तैयार है, परन्तु देह दुर्बल है।'' फिर उसने दूसरी बार जाकर यह प्रार्थना की; ''हे मेरे पिता, यदि यह मेरे पीए बिना नहीं टल सकता तो तेरी इच्छा पूरी हो।''

उसने फिर आकर उन्हें सोते पाया, क्योंकि उनकी आंखें नींद से भारी थीं। वह उन्हें फिर छोड़कर चला गया और फिर वही बात कहकर तीसरी बार प्रार्थना करने लगा।

Creation Autonomous Academy

2. मध्यस्थता की प्रार्थना (यूहन्ना 17 अध्याय):-

यीशु ने ये बातें कहकर अपनी आंखें स्वर्ग की ओर उठाते हुए कहा, ‘‘हे पिता, वह घड़ी आ पहुंची है। अपने पुत्र की महिमा कर, कि पुत्र तेरी महिमा करे। तूने तो उसे समस्त मानव जाति पर अधिकार दिया है कि वह उन सबको जिन्हें तूने उसे दिया है अनन्त जीवन दे। और अनन्त जीवन यह है कि वे तुझे जो एक मात्र सच्चा परमेश्वर है और यीशु मसीह को जानें जिसे तूने भेजा है। जो काम तूने मुझे करने को दिया था उसे पूरा करके मैंने पृथ्वी पर तेरी महिमा की है। हे पिता, अब तू अपने साथ मेरी महिमा उस महिमा से कर जो जगत की उत्पत्ति से पहिले, तेरे साथ मेरी थी। मैंने तेरा नाम उन मनुष्यों पर प्रकट किया है जिन्हें तूने जगत में से मुझे दिया है। वे तेरे थे, और तूने उन्हें मुझे दिया और उन्होंने तेरे वचन को मान लिया है। अब वे जान गए हैं कि जो कुछ तूने मुझे दिया है वह सब तेरी ओर से है, क्योंकि वे वचन जो तूने मुझे दिए, मैंने उन तक पहुंचा दिए हैं। उन्होंने उन वचनों को ग्रहण किया और वास्तव में जान लिया है कि मैं तुझसे निकला हूं, और उन्होंने विश्वास किया है कि तूने ही मुझे भेजा है। मैं उनके लिए विनती करता हूं --संसार के लिए विनती नहीं करता, परन्तु उनके लिए जिन्हें तूने मुझे दिया, क्योंकि वे तेरे हैं और सब कुछ जो मेरा है वह तेरा है, और जो तेरा है वह मेरा है, और इनमें मेरी महिमा प्रकट हुई है। अब मैं जगत में न रहूंगा, फिर भी वे जगत में रहेंगे और मैं तेरे पास आता हूं। हे पवित्र पिता, अपने उस नाम से जो तूने मुझे दिया है, इनकी रक्षा कर कि जैसे हम एक हैं, वे भी एक हों। जब मैं उनके साथ था, मैंने तेरे उस नाम से जो तूने मुझे दिया है उनकी रक्षा की और विनाश के पुत्र को छोड़ उनमें से कोई नाश न हुआ, इसलिए कि पवित्र शास्त्र की बात पूरी हो। परन्तु अब मैं तेरे पास आता हूँ, और ये बातें संसार में कहता हूँ, कि वे अपने में मेरा आनन्द पूरा पाएं। मैंने उन्हें तेरा वचन दिया है और संसार ने उनसे घृणा की है, क्योंकि जैसे मैं संसार का नहीं वैसे वे भी संसार के नहीं। मैं तुझसे यह विनती नहीं करता कि तू उन्हें संसार में से उठा ले, परन्तु यह कि तू उन्हें उस दुष्ट से बचाए रख। वे संसार के नहीं, जैसे कि मैं भी संसार का नहीं हूँ। सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर तेरा वचन सत्य है। जैसे तूने मुझे संसार में भेजा, मैंने भी उन्हें संसार में भेजा है। और उनके लिए मैं अपने आप को पवित्र करता हूँ, कि वे भी सत्य के द्वारा पवित्र किए जाएँ।

मैं केवल इन्हीं के लिए विनती नहीं करता, परन्तु उनके लिए भी जो इनके वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, कि वे सब एक हों, जैसे, हे पिता, तू मुझमें है और मैं तुझमें हूँ, वैसे ही वे भी हममें हों, जिससे कि संसार विश्वास करे कि तूने ही मुझे भेजा है। और वह महिमा जो तूने मुझे दी है मैंने उन्हें दी है, कि वे वैसे ही एक हों जैसे हम एक हैं, मैं उनमें और तू मुझमें, कि वे सिद्ध होकर एक हो जाएँ, जिससे संसार जाने कि तूने मुझे भेजा और जैसे तूने मुझसे प्रेम किया वैसे ही उनसे भी प्रेम किया। हे पिता, मैं चाहता हूँ कि जिन्हें तूने मुझे दिया है, जहाँ मैं हूँ, वहाँ वे भी मेरे साथ रहें, कि वे मेरी उस महिमा को देख सकें जिसे तूने मुझे दी है, क्योंकि तूने जगत की उत्पत्ति से पहिले मुझसे प्रेम किया। हे धार्मिक पिता, यद्यपि संसार ने तुझे नहीं जाना, फिर भी मैंने तुझे जाना, और इन्होंने भी जाना है कि तूने ही मुझे भेजा है, और मैंने तेरा नाम इनको बताया और बताता रहूँगा, कि जिस प्रेम से तूने मुझसे प्रेम किया वह उनमें रहे, और मैं उनमें।’’

Creation Autonomous Academy

प्रार्थना की शिक्षा (मत्ती 6:9-13) :-

तुम इस प्रकार प्रार्थना करना:, ‘हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है, तेरा नाम पवित्र माना जाए। तेरा राज्य आए। तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है वैसे ही पृथ्वी पर भी पूरी हो। हमारे दिन भर की रोटी आज हमें दे। और जैसे हमने अपने अपराधियों को क्षमा किया है वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर; और हमें परीक्षा में न ला परन्तु बुराई से बचा, क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही हैं। आमीन।

स्तिफनुस :-

‘‘हे प्रभु यीशु, मेरी आत्मा को ग्रहण कर !’’ ‘‘प्रभु, यह पाप उन पर मत लगा। (प्रेरितों० 7:59-60)

अध्याय-5

आत्मिक मल्लयुद्ध

अतः प्रभु और उसके सामर्थ्य की शक्ति में बलवान बनो। परमेश्वर के सम्पूर्ण अस्त्र-शस्त्र धारण करो जिससे तुम शैतान की युक्तियों का दृढ़ता पूर्वक सामना कर सको। हमारा संघर्ष तो मांस और लहू से नहीं वरन् प्रधानों, अधिकारियों, अन्धकार की सांसारिक शक्तियों तथा दुष्टता की उन आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं। इसलिए परमेश्वर के समस्त अस्त्र-शस्त्र धारण करो, जिससे तुम बुरे दिन में सामना कर सको और सब कुछ पूरा करके स्थिर रह सको। (इफि० 6:10-13)

हमारा युद्ध शैतान और उसकी शक्तियों से है। यह हमारे मन पर हमला करता है और हमारे विचारों पर अपना कब्जा जमाता है। यह आन्तरिक, अदृश्य युद्ध है।

बाहरी शत्रु से लड़ना आसान होता है, परन्तु आन्तरिक शत्रु का सामना करना कठिन होता है। परन्तु यह असम्भव नहीं होता। यह सम्भव है। परमेश्वर की सामर्थ्य में ही यह युद्ध जीता जा सकता है।

Creation Autonomous Academy

आत्मिक-मल्लयुद्ध आमने-सामने हमारी आत्मा में होता है इसलिए हमें विशेष सावधानी वरतनी पड़ती है।

परमेश्वर ने हमें अपनी ईश्वरीय सामर्थ्य प्रदान की है। हम उसकी सामर्थ्य में शैतान और उसकी सेनाओं का मुकाबला कर सकते हैं क्योंकि वह हारा हुआ है।

किसी भी युद्ध के लिए उस युद्ध के नियमों का पालन करना अनिवार्य होता है। क्योंकि बिना नियम के युद्ध नहीं जीता जा सकता। इसलिए हमें आत्मिक मल्लयुद्ध के नियमों को सीखना होगा। प्रार्थनापूर्वक आगे बढ़ें परमेश्वर के मार्गदर्शन और अगुवाई में आत्मिक मल्लयुद्ध के नियमों को सीखें, जिससे कि आत्मिक मल्लयुद्ध में दुष्ट का सामना कर सकें और विजय पा सकें।

अध्याय - 6

आत्मिक मल्लयुद्ध की रणनीति

बिना सिद्धान्त के व्यवहार नहीं होता। अतः आत्मिक मल्लयुद्ध के सिद्धान्त को जानना आवश्यक है। आत्मिक मल्लयुद्ध के सिद्धान्त या रणनीति निम्नलिखित हैं।-

1. हृदय को पवित्र करो।:-

याकूब 4:8 में लिखा है, ‘‘हे पापियों अपने हाथ शुद्ध करो, और हे दुचित्ते लोगों, अपने हृदय को पवित्र करो।’’ अपने हाथों को शुद्ध करना दुष्ट के आत्मिक गढ़ के वाहय प्रकटीकरण तथा अपने हृदय को पवित्र करना आन्तरिक परिणाम को दर्शाते हैं। प्रथम भाग जो दृश्य है उसके साथ व्यवहार करना सरल है। प्रथम वाक्य तो लक्षण तथा दूसरा वाक्य जड़ को दर्शाते हैं।

नशीले पदार्थों की लत में पड़े हुए व्यक्ति को यदि 30 दिनों तक नशीले पदार्थों के सेवन करने से मुक्त रखा व उसका उपचार किया जाए तो, उसके पश्चात उसे पुनः नशीले पदार्थों को लेने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। कारण उसे एक माह तक ऐसे पदार्थों से वंचित रखा गया था। फिर भी स्वतन्त्र होने के पश्चात् वह नशीले पदार्थ ले सकता है। क्योंकि उसके हाथ पवित्र हो गए हैं परन्तु हृदय नहीं। शरीर तो नशीले पदार्थों की लत से छूट गया परन्तु उसका मन अभी भी ऐसे आदत में पड़ा हुआ है और वह दुचित्ता बना रहता है, तथा उसकी शक्तिशाली निराधार कल्पनाएँ परमेश्वर के आदेशों का पालन करने में उसे रोके रहेंगी। दुष्ट का आत्मिक गढ़ उसी समय पूर्ण रूप से ध्वस्त किया जा सकता है जब एक दुचित्ता व्यक्ति एकनिष्ठ बन जाए।

2. पाप को देखें :-

याकूब के पास इसका एक सीधा व सरल इलाज हैः ‘‘दुःखी होओ और शोक करो और रोओ; तुम्हारी हँसी शोक में और तुम्हारा आनन्द दुःख में बदल जाए।’’ (याकूब 4:9) जब आप अपने पाप की गंदगी को देखेंगे तभी आप परमेश्वर की पवित्रता की ओर आएँगे। परमेश्वर के अनुग्रह के प्रति इससे बढ़कर और कोई अच्छा ढाँचा नहीं है कि

अपने पाप व परमेश्वर की पवित्रता के बीच की खाईं को देखें। कहाँ? प्रभु की उपस्थिति में। कितने समय के लिए? जब तक कि वह आपको ऊपर न उठाए। वही निर्णय लेगा कि आप कब कितने पवित्र हुए हैं। आप प्रतीक्षा करते हुए परमेश्वर की आवाज को सुनें। इसी बीच ''एक दूसरे की बदनामी न करो।'' (याकूब 4:11) मात्र एक ही विचार आवश्यक है और वह है, ''हे प्रभु जो तेरा है वह मेरा है, मैं निराधार कल्पनाएँ नहीं गढ़ूँगा, परन्तु तेरे वचन को स्वीकार करूँगा।''

3. पापों को मान लें :-

याकूब 4:9 को लागू करने का सबसे अच्छा तरीका है कि हम परमेश्वर की उपस्थिति में चले जाएँ और उसे हमारे स्वयं के पापों को बतलाने दें; और साथ ही साथ लोगों के देखते-देखते अपने पापों के द्वारा जो उन्हें चोट पहुँचाया है, उन्हें मान लें। क्योंकि ऐसा न करने पर हम स्वयं को बचाने का प्रयत्न करते रहेंगे और दूसरों के साथ पूर्ण रूप से अपना विचार नहीं बाँटेंगे। बिना किसी गवाह के हमें ऐसा केवल परमेश्वर की उपस्थिति में करना चाहिए। हमें वहाँ पर उस समय तक बैठे रहना चाहिए जब तक कि हमारे अपने विवाद समाप्त न हो जाएँ और पूर्ण रूप से पश्चाताप न कर लें। अब मेरे पास मात्र एक ही मन है: अर्थात परमेश्वर का मन। अब हमारे हाथ पवित्र बने रहेंगे। क्योंकि हृदय के पवित्र होने के कारण जो जड़ है अर्थात दुचित्तापन, वह समाप्त हो जायेगा।

4. दुष्ट के आत्मिक गढ़ को ध्वस्त कर दें :-

सम्भ्वतः परमेश्वर ने दुचित्तेपन के सम्बन्ध में आपको कायल किया होगा। अब आप दुष्ट के आत्मिक गढ़ को अपने जीवन में देख रहे होंगे जिसे आप ध्वस्त करना चाहते हैं। मैं आपको प्रोत्साहित करता हूँ कि आप ध्वस्त करने से पीछे न हटें। आप परमेश्वर की इच्छा को जानें और अपने तर्कों, विवादों को खत्म करें। यदि नगर में पास्टरों के बीच फूट है तो परमेश्वर का यही सन्देश उन्हें दें। परमेश्वर के वचन रूपी हथौड़े से उन परिस्थितियों पर बार-बार प्रहार करें। (मत्ती 4:4,7,10, इफि० 6:17) छोड़िए नहीं---दिन - रात ऐसा करते रहिए। उपयुक्त वचन को याद करें और उनका उपयोग करें। परिस्थितियों के मध्य परमेश्वर का वचन लीजिए। परमेश्वर के वचन को मान लें। जब कभी आप ऐसा करते हैं तो आप अटूट दीवार जैसी परिस्थिति पर आघात पहुँचाते हैं। ऐसा करते रहिए। तुरन्त या बाद में पहली दरार दिखाई देने लगेगी। उसके बाद किसी न किसी समय वह दीवार पूर्ण रूप से गिर जाएगी।

5. निरन्तर ध्वस्त करने में लगे रहें।:-

''क्योंकि हमारे लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं, पर गढ़ों को ढा देने के लिए परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं।'' (2 कुरि० 10:4) इसके पहले कि हम अपने नगर में दुष्ट के आत्मिक गढ़ को ध्वस्त करें, हम अपने व्यक्तिगत गढ़ों को ढा दें जिन्हें शैतान ने हमारे जीवनों में स्थित कर दिया है। परमेश्वर की इच्छा के विपरीत सारी बातें समाप्त हो जानी चाहिए। हमें मसीह में पूर्ण रूप से स्वतन्त्र हो जाना चाहिए। इस प्रकार की स्वतन्त्रता के बिना दुष्ट के ऊपर हमारे सभी प्रहार विफल हो जाएँगे। फिर भी, यदि पुत्र हमें स्वतन्त्र करता है तो हम शीघ्र अतिशीघ्र अपने नगर को मसीह के लिए जीत सकेंगे। (यूहन्ना 8:26, 1 तीमु० 2:1-8) में वर्णित प्रार्थना रूपी ''पवित्र हाथों'' की सुसमाचार हेतु आवश्यकता है।

क्या आपने अपने जीवन (मन) में दुष्ट के आत्मिक गढ़ों को ध्वस्त करना आरम्भ कर दिया है? यदि हाँ! तो ध्वस्त करने में लगे रहिए!

Creation Autonomous Academy

6. दुश्मन के हमले के पहले उस पर हमला करें।:-

आत्मिक मल्लयुद्ध में रक्षात्मक रणनीति एक वैध रणनीति है, इसमें सीमितताएँ हैं। जब शत्रु हमला करता है, तो विश्वासी स्वयं की सुरक्षा के लिए परिश्रम करेगा। यदि विश्वासी अपनी स्वयं की सुरक्षा में सफल होता है, तब शत्रु

वापसी के लिए बल प्रयोग करता है। यदि दूसरी तरफ विश्वासी असफल होता है सुरक्षा करने में, तब शत्रु कार्य करता है।

‘‘यदि हम रक्षात्मक होते हैं तो शत्रु आक्रामक होता है। यदि हम आक्रामक होते हैं तो शत्रु रक्षात्मक स्थिति में हो जाता है।’’

शत्रु हमले का निशाना बनता है। उसका केन्द्र हमले का शिकार होता है। उसका शास्त्रागार हमले का शिकार होता है। उसकी रणनीति हमले का शिकार होती है। वह समय पाकर विश्वासी पर आक्रमण करे इसके पहले उस पर आक्रमण करके उसे गिरा दिया जाता है। इस तरीके से विश्वासी सुरक्षा में आराम करेगा।

आत्मिक संग्राम में लगा विश्वासी पहले परमेश्वर की प्रतीक्षा करे। प्रतीक्षा करते समय वह परमेश्वर से कह सकता है मेरे विरूद्ध शत्रु की बनायी योजना को विफल करें। प्रभु शैतान जो मेरे विरूद्ध योजना बना रहा है उसे मुझे दिखा।

जब परमेश्वर शैतान की उस योजना को जो वह विश्वासी के विरूद्ध बना रहा है दिखा देगा तो विश्वासी शैतान की उस योजना को परिपक्व होने के पहले नष्ट कर देगा। यह हमले के पहले हमला है। बाइबल कहती है अद्योलोक के फाटक कलीसिया पर प्रबल न होंगे। यह अद्भुत है जब कलीसिया उठेगी और अद्योलोक के फाटक के विरूद्ध युद्ध करेगी, तो वह हमले के पहले हमला करके उसे गिरा देगी। (भजन 149:1)

आप उठें और ‘‘दुश्मन के हमला करने से पहले आप उस पर हमला करें।’’ आक्रामक तेवर अख्तियार करें। परमेश्वर की महिमा करें। आमीन।

Creation Autonomous Academy

अध्याय -7

आत्मिक मल्लयुद्ध की कार्यनीति

सही रणनीति के साथ-साथ सही कार्यनीति अपनाना भी युद्ध के लिए आवश्यक है।

1. पूर्ण रूप से तैयार सैनिक :-

''इसलिए तीन सौ पुरूषों ने अपनी रसद का सामान बांध लिया और हाथों में नरसिंगे ले लिए।'' (न्यायियों 7:8)

2. जासूसी करना :-

उसी रात को ऐसा हुआ कि यहोवा ने उससे कहा, ''उठ, नीचे जाकर छावनी पर चढ़ाई कर क्योंकि उसे मैंने तेरे हाथ में कर दिया है। परन्तु यदि तू नीचे जाने से डरता है तो अपने सेवक फूरा के साथ नीचे छावनी में जा और तू सुनेगा कि वे क्या कह रहे हैं, तब छावनी पर आक्रमण करने के लिए तेरा साहस बढ़ेगा।'' अतः वह अपने सेवक फूरा के साथ छावनी के छोर तक पहुंच गया। मिद्यानी और अमालेकी और सब पूर्वी लोग असंख्य टिड्डियों के समान तराई में फैले पड़े थे। उनके ऊंट भी समुद्र के किनारे की बालू के कणों के समान अनगिनत थे। जब गिदोन वहां पहुंचा तो एक मनुष्य अपने मित्र को अपना स्वप्न सुना रहा था। उसने कहा, ''सुन, मैंने एक स्वप्न देखा है कि जौ की एक रोटी लुढ़कते -लुढ़कते मिद्यान की छावनी में आई और तम्बू को ऐसी टक्कर मारी कि वह गिर गया और उल्टा होकर पड़ा रहा।'' और उसके मित्र ने उत्तर दिया, ''यह योआस के पुत्र गिदोन नामक इस्राएली की तलवार को छोड़ और कुछ नहीं है। परमेश्वर ने मिद्यान और सारी छावनी को उसके हाथ में कर दिया है।''(न्यायियों 7:9-14)

3. घेराबन्दी करना :-

ऐसा हुआ कि गिदोन ने स्वप्न और उसका अर्थ सुनकर परमेश्वर की आराधना की और इस्राएल की छावनी में जाकर कहा, ''उठो, यहोवा ने मिद्यानियों की छावनी को तुम्हारे हाथ में कर दिया है।'' तब उसने तीन सौ पुरूषों को तीन टुकड़ियों में बांट दिया। और उसने सबके हाथों में एक-एक नरसिंगा और खाली घड़ा दिया और हर एक घड़े में एक मशाल थी। और उसने उनसे कहा, ''मेरी ओर देखो और जैसा मैं करूं वैसा ही करो; जब मैं उस छावनी के छोर पर पहुँचूं तब जैसा मैं करूंगा, वैसा ही तुम भी करना। जब मैं और मेरे साथी नरसिंगा फूँकें तब तुम भी छावनी के चारों ओर नरसिंगा फूँकना और ललकारना, 'यहोवा के लिए! गिदोन के लिए।'' (न्यायियों 7:15-18)

4 आक्रमण करना :-

मध्य रात्रि के आरम्भ में ज्यों ही सैनिकों का पहरा बदला त्यों ही गिदोन और उसके साथ के सौ पुरूष छावनी की सीमा पर पहुंच गए। फिर उन्होंने नरसिंगे फूँके और अपने हाथ के घड़ों को फोड़ दिया। जब तीनों टुकड़ियों ने नरसिंगे फूँके और घड़ों को फोड़ दिया, उन्होंने अपने बाएँ हाथों में मशालें और दाहिने हाथों में फूँकने के लिए नरसिंगे पकड़े। फिर वे चिल्ला उठे, 'यहोवा की तलवार और गिदोन की तलवार !' छावनी के चारों ओर प्रत्येक अपने-अपने स्थान पर खड़ा रहा और सारी सेना चिल्लाते हुए भागी। और तब उन्होंने तीन सौ नरसिंगों को फूँका तो यहोवा ने सारी सेना में एक दूसरे के विरूद्ध तलवार चलवाई और सैनिक सरेरा की ओर बेतसित्ता तक और तब्बात के पास के आबेलमहोला तक भाग गए। तब इस्राएली पुरूष नप्ताली और आशेर और मनश्शे से बुलाए गए और उन्होंने मिद्यानियों का पीछा किया। (न्यायियों 7:19-23)

5 विजय प्राप्त करना :-

इस्राएली सेना ने मिद्यानी सेना का पीछा किया और उसके शासकों को पकड़ लिया और उन्हें मार गिराया। इस्राएली सैनिक ओरेब और जोब के सिर गिदोन के पास लाए। (न्यायियों 7:24-25)

Creation Autonomous Academy

अध्याय-8

दुश्मन को जानें

पतरस ने हमें चेतावनी दी है ‘‘संयमी और सचेत रहो। तुम्हारा शत्रु शैतान गर्जने वाले सिहं की भांति इस ताक में रहता है कि किसको फाड़ खाए।’’ (1 पतरस 5:8)

1. धोखेबाज है :-

पतरस का अभिप्राय यह नहीं कि हमें शैतान से डराए। यहां मुख्य शब्द है भांति। शैतान सिंह की भांति घूमता रहता है। वह सिंह नहीं है। यीशु यहूदा जाति का सिंह है।(प्रका० 5:5) शैतान केवल नकल करने वाला और धोखा देने वाला है-सिंह की भांति घूमता रहता है डराने और अभित्रस्त करने के लिए।

2. मसीह के सम्मुख शक्तिहीन है:-

हमारे विरूद्ध उसका संघर्ष मात्र मनोवैज्ञानिक है। कलवरी पर, उसके ऊपर मसीह द्वारा विजय पाने से, वह सचमुच बलहीन कर दिया गया है। इस कारण वह हमें कोई भी वास्तविक हानि नहीं पहुंचा सकता। (इब्रा० 2:14, लूका 10:18-19)

Creation Autonomous Academy

3. सामना करो!:-

हमें स्पष्ट रूप से निर्देश दिया गया है कि हम उसका सामना करें। शैतान बड़ा चालाक है वह अपनी शक्तियों का प्रयोग कर हमारा ध्यान इस तथ्य से हटाता है कि यदि-तुम परमेश्वर की संतान हो तो कोई वास्तविक खतरा नहीं है।

शैतान और दुष्टात्माएं जानती हैं कि वे शक्तिहीन हैं। इसी कारण दुष्टात्माएं तेजी से चीखती हैं। परन्तु जो हमें करना चाहिए वह यह है कि हम उसका सामना करें। ‘‘इसलिए परमेश्वर के अधीन हो जाओ। शैतान का सामना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग जाएगा।’’ (याकूब 4:7) याद रखो पहले अपने आप को परमेश्वर के अधीन समर्पित करो, और तब शैतान का सामना करो।

4. भयभीत न हो!:-

क्या कलीसिया के अगुवों को ओझाओं, तान्त्रिकों और दुष्टात्माओं के कार्य करने वालों से डरना चाहिए? (गिनती 23:23) वचन कहता हैः ''क्योंकि याकूब के विरूद्ध कोई अपशकुन नहीं होता, न ही इस्राएल के विरूद्ध कोई शकुन विद्या लागू होती है।'' (गिनती 23:23)

अपशकुन, ओझाओं का श्राप प्रभावी नहीं होगा। मसीह में विश्वास रखने के द्वारा तुम परमेश्वर की संतान हो, इसलिए तुम धन्य ठहरोगे और तुम सुरक्षित ठहरोगे।

गिनती 23:23 हम पर लागू होता है। बाइबल कहती हैः ''देख, एक जाति सिंहनी की भांति प्रकट हो रही है----'' (गिनती 23:24) हम जो मसीह के अनुयायी हैं, हम उसके स्वभाव को पहन लेते हैं जो यहूदा घराने का सिंह है। हम सिंह के समान उठते हैं और शैतान का सामना करते हैं। बाइबल कहती है कि जब हम ऐसा करते हैं तब''------दुष्टात्माएं भी--थरथराती हैं।'' (याकूब 2:19)

परमेश्वर की सन्तान होने के कारण तुम सिंह की भांति उठो और शैतान पर गरजो यदि वह तुमको परेशान करने की कोशिश करे।

5. खोजो और हमला करो!:-

लोग कहते हैं प्रार्थना करो शैतान मेरे पीछे पड़ा है। मेरा कहना है शैतान को तुम्हारे पीछे नहीं होना चाहिए-तुमको शैतान का पीछा करना चाहिए। उसे खोजो और उस पर हमला करो।

6. दुश्मन की शक्ति को पहचानें!:-

आत्मिक मल्लयुद्ध हेतु दुश्मन की शक्ति को पहचानना अत्यावश्यक है।

क-दुष्ट के आत्मिक गढ़ :-

दुष्ट के आत्मिक गढ़ क्या हैं? कहां हैं? उन्हें कैसे ध्वस्त किया जा सकता है?

दुष्ट के आत्मिक गढ़ शैतान के गुप्त हथियार हैं। गढ़ों के गुप्त प्रयोग द्वारा शैतान कलीसिया के चाल-चलन को बिगाड़ता है। उन्हें पहचान कर ध्वस्त कर देना चाहिए ताकि हम स्वार्गिय नियंत्रण में पुनः आ जाएं।

क्या यह सम्भव है कि कोई व्यक्ति अन्धा होते हुए भी यह न जानता हो कि वह सचमुच अन्धा है? हां, यह सम्भव है। ऐसा प्रतिदिन होता है। कहां? हमारी कलीसियाओं में। वास्तव में, समस्या इतनी विकट है, कि स्वयं प्रभु यीशु ने एक विशेष कलीसिया को पत्र भेज दिया। (प्रका॰ 3:14-22) स्थिति इतनी गंभीर थी कि यीशु को उनसे कहना पड़ा, ''तुम सोचते हो कि तुम मेरे नाम में एकत्रित हुए हो, परन्तु वास्तविकता तो यह है कि मैं तुम्हारी सभा से बाहर हूं। (प्रका० 3:20) क्या आप सोच सकते हैं कि यीशु की कलीसिया ने यीशु को कलीसिया के बाहर छोड़कर दरवाजा बन्द कर दिया है?

शैतान का शस्त्रागार :-

शैतान के पास तीन मुख्य हथियार हैं जो निम्नलिखित हैं।-

1. अत्यन्त प्रत्यक्ष पाप :-

शैतान को परीक्षा लेने वाले के रूप में जाना जाता है। (मत्ती 4:3) वह बड़ी कुशता से इस विशेष हथियार का प्रयोग करता है। पाप एक सक्रिय हथियार है। एक नियंत्रित 'प्रक्षेपणास्त्र' (guided missile) के समान यह हथियार आपको खोजता रहता है। जब यह आपको चोट पहुंचाता है तब आपको तुरन्त आभास होता है, क्योंकि पाप की मजदूरी मृत्यु है। (रोमि॰ 6:23)

Creation Autonomous Academy

2. निष्क्रियता -दोषारोपण :-

शैतान का दूसरा हथियार निष्क्रियता है। एक फन्दे के समान, यह आपके लिए गुप्त रूप से लगाया गया है ताकि आप इसमें फँस जाएं। इसे ‘‘दोषारोपण’’ कहते हैं। शैतान को बाइबल में भाइयों पर दोष लगाने वाला कहा गया है। (अय्यूब 1:6-12, जकरय्याह 3:1, प्रका० 12:10) यही वह दिन -रात परमेश्वर के सिंहासन के सामने करता रहता है। जब परमेश्वर के सिंहासन के सामने वह ऐसा करने का साहस रखता है तो जरा सोचिए कि हम लोगों के प्रति वह ऐसा करने कि कितनी योग्यता रखता होगा। यद्यपि हमें क्षमा कर दिया गया है, तौभी वह हमारे द्वारा किए गए पापों को स्मरण कराता रहता है, और अधिक असर डालने के लिए वह हमें ऐसे पापों को भी स्मरण कराता है जिन्हें हम कर सकते थे परन्तु उन्हें हमने नहीं किया।

दोषारोपण के प्रयोग द्वारा शैतान हमारे भीतर इतनी अधिक चिन्ता उत्पन्न कर देता है ताकि हम परमेश्वर के सामर्थी हाथों से छूट जाएं। (1 पत० 5:6) शैतान का उद्देश्य हमें उस पशु के समान असहाय कर देना है जो किसी फंन्दे में फँस गया हो। (2 तीमु० 2:26, 1 पत० 5:8-9) इसी प्रकार हम जानते हैं कि हमारे विरोध में इस हथियार का प्रयोग सफलतापूर्वक किया जा चुका है, क्योंकि हम मसीह में अपनी गति की स्वतंत्रता को खो बैठे हैं। चिन्ताएँ हम पर प्रबल हो जाती हैं। विश्वास के स्थान पर भय आ जाता है और आशा के स्थान पर निराशा छा जाती हैं। (2 तीमु० 1:17)

3. दुष्ट आत्मिक गढ़ :-

शैतान का तीसरा हथियार सबसे खतरनाक है। यह विशेष हथियार औसत मसीहियों के लिए अनजाना है। यह न तो सक्रिय है और न ही निष्क्रिय है परन्तु गुप्त है। शैतान सुगमतापूर्वक इस हथियार को हमसे गुप्त रखता है। स्वयं के विनाश के पश्चात जांच करने पर ही हमें इस हथियार का बोध होता है। इस विनाशकारी हथियार को ‘‘दुष्ट आत्मिक गढ़’’ नाम से जाना जाता है। (2 कुरि० 10:45) इससे शैतान मसीहियों को नियंत्रित करता है तथा उनसे ऐसे कार्य करवाता है जिनसे वे स्वयं को व दूसरों को भयंकर नुकसान पहुंचाते हैं। इसके प्रयोग से शैतान हमारी साक्षी पर आरोप लगाता है। यह इस बात में विरोधाभास उत्पन्न करता है कि हम क्या हैं और क्या विश्वास करते हैं। दुष्ट आत्मिक गढ़ छल-कपट के गुप्त निपुण प्रकटीकरण करने का अभिनय करता है। यह शैतान के कपटी चरित्र के चातुर्य का रूप है, क्योंकि शैतान को भरमाने वाला कहा गया है। (यूहन्ना 8:44, प्रका० 12:9)

Creation Autonomous Academy

गढ़ एक गुप्त भंडार :-

दुष्ट के आत्मिक गढ़ों के सम्बन्ध में हम निम्नलिखित बातें पाते हैं।--

1. कहाँ स्थित हैं? :-

सर्व प्रथम हम यह देखते हैं कि ये दुष्ट आत्मिक गढ़ कहां स्थित हैं? इसका पता लगा लेने पर दुष्ट आत्मिक गढ़ को परिभाषित करने में सुविधा होगी। ‘‘निराधार कल्पनाएं, ज्ञान व विचार’’ मन में होते हैं। हम अपने मन में निराधार कल्पनाएं करते हैं, वहीं ज्ञान संचित होता है और उसी के द्वारा विचार उत्पन्न होते हैं। मैं विश्वास करता हूँ कि यह कहना सुरक्षित होगा कि दुष्ट आत्मिक गढ़ जिनका वर्णन 2 कुरि० 10:3-5 में किया गया है, वे मन में स्थित है।

2. किस प्रकार दिखायी देते हैं? -

एक दुष्ट आत्मिक गढ़ वह मन है जिसमें आशाहीनता व्याप्त है, जो हमें विवश करता है कि हम उन अपरिवर्तनशील परिस्थितियों को स्वीकार करें जो परमेश्वर की इच्छा के विरोध में हैं।

दुष्ट आत्मिक गढ़ की उपस्थिति को उस समय आवश्यक रूप से समझना चाहिए जब कोई मसीही व्यक्ति किसी ऐसी परिस्थिति को बदलने में स्वयं को शक्तिहीन समझे जिससे वह स्पष्ट रूप से परिचित हो परन्तु वह परिस्थिति परमेश्वर की इच्छा के विपरीत हो। उदाहरण के लिए, बाइबल हमें बताती है कि हमें अपने शत्रुओं को क्षमा करना चाहिए। फिर भी बार-बार हम किसी व्यक्ति को क्षमा करने में असमर्थ रहते हैं। परमेश्वर हम लोगों से जो कुछ चाहता है उसे करने में हम अपने आपको पूर्णतयाः असमर्थ पाते हैं। यह एक विशिष्ट गढ़ है। परमेश्वर की इच्छा स्पष्ट रूप से बता दी गयी है परन्तु फिर भी वास्तविकता बिल्कुल अलग कहानी प्रस्तुत करती है। वास्तव में, ऐसी स्थिति परमेश्वर की बताई गयी इच्छा का खुले -आम विरोध करती है, और वास्तविकता को परिवर्तित करने में हम स्वयं को असमर्थ पाते हैं चाहे हम कितनी भी कोशिशें क्यों न करें। इसका परिणाम आशाहीनता के रूप में ही प्रकट होता है।

3. गढ़ का प्रकट होना :-

उदाहरण के लिए जब हम आराधनालय में जाकर परमेश्वर के वचन को सुनते हैं तो तुरन्त विश्वास कर लेते हैं। यहां तक कि हम ऊँची आवाज में वचन सुनकर आमीन भी बोल देते हैं। प्रचार करते समय ''पुलपिट'' पीटकर किसी विशेष विषय के प्रति परमेश्वर की इच्छा की घोषणा करते हैं। बाइबल के पदों द्वारा हम अपनी व्याख्या की पुष्टि करते हैं। हम अधिकार पूर्वक बिना दोष इस कथन को बताते हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि यह परमेश्वर के वचन से बोल रहे हैं। इसके विपरीत, बाद में जब हम आराधनालय से बाहर निकलते हैं, तो हम अपने मस्तिष्क के एक भाग से दूसरे भाग में चले जाते हैं। अविजित (अजेय) समस्याएं पुनः हमें चुनौती देने के लिए तत्पर हो जाती हैं। जब हम उनको देखते हैं तब हम तुरन्त अपनी युक्तियों के साथ अपने अगले कदम के विषय में विचारमग्न हो जाते हैं। हम तुरन्त भूल जाते हैं कि अभी-अभी हमने क्या सुना है। हम ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि हम दुचित्ते हैं। (याकूब 1:8)

क्या आप पासवानों और अगुवों पर होने वाले इसके विनाशकारी प्रभाव का अनुमान लगा सकते हैं? वे क्योंकर अपने नगरों में होने वाले आश्चर्यकर्मों पर विश्वास कर सकते हैं, जब कि वे स्वयं उन लोगों को क्षमा करने में असमर्थ हैं जिन्होंने उन्हें चोट पहुंचाया है। या फिर वे क्योंकर विश्वास कर सकते हैं कि परमेश्वर उनकी स्थानीय कलीसिया में होकर कोई कार्य करे? प्रतिक्षण, पवित्रात्मा उन्हें उस दर्शन का स्मरण दिलाता रहता है जिसके कारण वे सेवक व सेविका बने थे। शैतान दुष्ट आत्मिक गढ़ को क्रियाशील बनाता है और कहता है, ''क्या तू इस पर विश्वास नहीं कर सकता! जरा देख तू दुर्दशा के कैसे कुंड में पड़ा हुआ है।'' यही कारण है कि अगुवों के मन में दुष्ट के आत्मिक गढ़ों को बिना पहचाने और बिना नष्ट किए अपने नगर को मसीह के लिए जीतना व्यर्थ सिद्ध होता है। (याकूब 1:6-8)

Creation Autonomous Academy

शैतान पाप, चिन्ता व दुष्ट आत्मिक गढ़ों का प्रयोग निःसंकोच व मुख्यतः इस अभिप्राय से करता है कि वह किस प्रकार अस्थिरता उत्पन्न कर दे। इसका वर्णन याकूब ने अपनी पत्री में किया है। (याकूब 1:6-8, 3:13,4:4) शैतान का यह प्रयोग अन्ततः परमेश्वर के सामर्थी हथियारों का

प्रयोग करने के प्रति चर्च को रोक देता है। (2 कुरि० 10:8) जब मसीही लोग परमेश्वर की इच्छा को जानते हुए कुछ और ही करते हैं। तब दुष्ट आत्मिक गढ़ की सहायता से शैतान उन्हें दुष्टता के प्रति बाध्य करता है।

ख- दुष्ट आत्मिक गढ़ की पहचान :-

दुष्ट आत्मिक गढ़ की निम्नलिखित विशेषताएं दी गयी हैं, जिनके माध्यम से दुष्ट आत्मिक गढ़ की पहचान होती है।-

1. दुष्ट आत्मिक गढ़ मन में स्थित होता है। :-

लौदीकिया की कलीसिया को स्मरण करें। (प्रका० 3:14-20) जिसके सदस्य विश्वास करते थे कि वे धनी हैं, और उन्हें किसी वस्तु की घटी नहीं थी। परन्तु वास्तव में वे अभागे, तुच्छ, कंगाल और नंगे थे। इसका उदाहरण पौलुस रोमि० 8:6-7 में देता है: ''शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है, क्योंकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है क्योंकि यह न तो परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन है, और न हो सकता है।''

2. दुष्ट आत्मिक गढ़ अच्छे सोच विचारों से बने होते हैं।:-

दुष्ट आत्मिक गढ़ अच्छे सोच विचारों से बने होते हैं। दुष्ट आत्मिक गढ़ की यह विशेषता इसको इतना योग्य बना देती है कि इसका आभास ही नहीं होने पाता है। हम अच्छे -सोच विचारों पर विरले ही सन्देह करते होंगे। फिर भी शैतान इसका प्रयोग बड़ी चतुराई से करता है। हमारे स्वयं के अच्छे सोच विचार परमेश्वर द्वारा आने वाले सर्वश्रेष्ठ सोच विचार के लिए रूकावट का कारण बन जाते हैं। इसका संकेत पतरस के जीवन में मिलता है। (मत्ती 16:21-23) यीशु ने मनुष्य को डाँटने के लिए किस प्रभावशाली शब्द का प्रयोग किया था? जब यीशु ने पतरस को नाम लेकर बुलाया तब उसने ''शैतान'' शब्द से उसे सम्बोधित किया। (मत्ती 16:23) किसी अन्य मनुष्य को न तो पहले न ही बाद में यीशु ने इस शब्द से सम्बोधित किया। जबकि हम यह देखते हैं कि पतरस यीशु के शिष्यों में से एक मुख्य शिष्य था, यह बात हमें उलझन में डाल देती है। वास्तव में वह यीशु के समूह का अगुवा था। यीशु ने पतरस की ऐसी सख्त भर्त्सना की? दूसरे शब्दों में, यीशु यह कह रहा था, ''तुम परमेश्वर के दृष्टिकोण के स्थान पर मनुष्य के दृष्टिकोण से देख रहे हो।'' पतरस को ''शैतान'' कहकर पुकारने के द्वारा, यीशु ने मनुष्य के दृष्टिकोण से शैतान के दृष्टिकोण का पहचान कराया। परमेश्वर का पुत्र होने के कारण वह पतरस के मन में भरी निराधर कल्पनाओं की दीवार के उस पार देखने में सक्षम था। जो कुछ उसने देखा उसने पुकारा। श्रेष्ठ का शत्रु सबसे बुरा नहीं होता। श्रेष्ठ का शत्रु अच्छा होता है। क्योंकि अच्छे और श्रेष्ठ को समझने में कोई भी सरलता पूर्वक उलझन में पड़ सकता है। शैतान इसे जानता है और इसका प्रयोग कर लाभ उठाना जानता है। इसलिए हमें प्रोत्साहित किया गया है, ''हम हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं।'' (2 कुरि० 10:5); मात्र बुरे भावनाओं को ही नहीं अपितु अच्छे सोच-विचारों (भावनाओं) को भी। लौदीकिया की कलीसिया ठण्डी (बुरी) नहीं थी परन्तु गुनगुनी (अच्छी) थी, ऐसी स्थिति इस बात को समझने में रूकावट पैदा कर रही थी कि वह कलीसिया गर्म (बहुत अच्छी) नहीं थी।

सबसे खतरनाक जो एक मसीही लेकर चलता-फिरता रहता है, वह है उसका मन, क्योंकि उसका मन सोच-विचारों (भावनाओं) को उत्पन्न करने की क्षमता रखता है। बुरे विचारों (भावनाओं) को सरलता पूर्वक पहिचाना व पता लगाया जा सकता है। यह तो अच्छे विचार (भावनाएं) ही हैं जिन्हें उत्पन्न करने की क्षमता मन के पास है, इनके द्वारा अक्सर लोग घोर विपत्ति में पहुँच जाते हैं।

Creation Autonomous Academy

3. दुष्ट आत्मिक गढ़ अक्सर हमारी शक्ति के संरक्षण में विकसित होते हैं। :-

शैतान हमेशा हमारी स्वाभाविक शक्ति पर निशाना लगाता है जिससे वह अपने गढ़ों तक पहुंच जाए।

इसके लिए बहुत ही साधारण कारण है। हम अपने कमजोरियों के प्रति चैतन्य बने रहते हैं और इस कारण उन पर सूक्षमता पूर्वक सावधानी से ध्यान देते हैं। ऐसा करने से शैतान को अपने हथकण्डों का प्रयोग करने में अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। परन्तु हमारी मजबूत बातों के साथ ऐसा नहीं है। जब हम स्वयं को मजबूत समझते हैं तो हम उस विशेष जगह पर कुछ शिथिल पड़ जाते हैं। (1 करि० 10:12-13) उदाहरणार्थ जब हमारी आत्मिक कमजोरियों की बात आती है, तो हम प्रतिदिन उनके लिए प्रार्थनाएं करते हैं। भूतकाल में की गयी हमारी गलतियों का परिणाम इतना कष्टप्रद होता है, जिन्हें हम दोहराना नहीं चाहते। इसके बावजूद, अपनी स्वाभाविक शक्ति के प्रति अधिक चैतन्य नहीं रहते हैं। आत्मविश्वास अधिक होने के कारण शैतान इस क्षेत्र में अधिक स्वतंत्रता पूर्वक प्रवेश करता है।

आप अपनी ज्ञात शक्तियों की सूची बनाएं। उनके प्रति सजग हों। अपने शरीर के उन अंगों की सूची बनाएं जो शैतान के लिए उपलब्ध हैं, जिससे आप उन शक्तियों को कम कर सकें। ऐसा आपको नित्य करना होगा। उदाहरणार्थ वह क्षेत्र जहां मैं कमजोर हूँ और जहां मैं पहले गिर चुका हूँ, उन्हें मैं भलीभांती जानता हूँ। ज्यों ही मैं नित्य आने वाली समस्याओं, परीक्षाओं में पड़ता हूँ, तो तुरन्त उसे समझ लेता हूँ। फिर भी, अपने जीवन के अन्य पहलू में, जहां मैं ऐतिहासिक रूप में मजबूत हूँ, तो पहले पहलू के समान शैतान के कार्य को नहीं समझता हूँ। इसमें पहले से कोई भी चेतावनी नहीं होती। मुझे इस पहलू के प्रति भी सावधान रहना होगा।

4. दुष्ट आत्मिक गढ़ अक्सर मानसिक आघात पहुंचाते हैं।:-

''मैं फिर कभी नहीं क्षमा करूंगा, कभी नहीं।'' और दूसरा कोई इस प्रकार कहेगा, ''मैं चर्च में कभी पैसा नहीं दूंगा, कदापि नहीं।'' परमेश्वर की दया से भरपूर कोई व्यक्ति क्यों क्षमा नहीं करना चाहता, जो कि उसके वरदान का मुख्य आधार है? भेंट देने का वरदान रखने वाला व्यक्ति क्योंकर स्वार्थी और स्वयं केन्द्रित बन गया?

पतरस को यीशु ने जीवित हो जाने के बाद तीसरी बार तथा अन्य लोगों को भी दर्शन दिया। (यूहन्ना 21) पतरस ही वह ऐसा व्यक्ति था जो सबसे पहले बोलता, प्रश्न पूछता तथा सूचनाएं देता था। फिर भी इस समय पतरस कुछ नहीं बोला। यीशु ने जब उससे पूछा कि क्या वह उससे प्रीति रखता है तो उसने हां में उत्तर दिया। एक सच्चा अगुआ अगुवाई करने की सेवा प्रकट करने से हिचकिचा रहा था। यदि पतरस एक सच्चा अगुवा था तो वह ऐसा क्यों कर रहा था? फिर भी जब यीशु ने पतरस से कहा कि वह उसका इन्कार करेगा तब पतरस ने यीशु को पूरे आश्वासन के साथ उत्तर दिया। सम्भवतः वह कहना चाहता होगा,''मैं जानता हूँ कि मैं मजबूत और निष्ठावान हूँ, इसलिए मैं जानता हूँ कि मैं तुझे कभी नहीं छोड़ूँगा।'' शैतान अच्छी तरह से जानता है कि किस व्यक्ति को स्वयं पर अधिक भरोसा है। (1 कुरि० 10:12) परमेश्वर द्वारा दिए गए वरदान को व्यवहार में लाने के प्रति पतरस अनिच्छुक दिखायी देता है क्योंकि भूत काल की कष्टदायी घटनाओं के कारण उसे आघात पर आघात महसूस हो रहा था।

5. दुष्ट आत्मिक गढ़ दुचित्तेपन को उत्पन्न करते हैं।:-

दुष्ट आत्मिक गढ़ दुचित्तेपन को उत्पन्न करते हैं, जिसका परिणाम आत्मिक व भावनात्मक अस्थिरता में दिखाई देता है। याकूब हमें चेतावनी देता है,''उपदेशक ---और भी दोषी ठहरेंगे; (याकूब 3:1) इस युग में जब कि चर्च में उपदेशक के पद को प्रतिष्ठा की दृष्टि से प्रतिष्ठित किया गया है, ऐसी दशा में इस चेतावनी को

Creation Autonomous Academy

समझना बहुत कठिन हो गया है। इस चेतावनी को वे तभी समझेंगे जब वे याकूब की शिक्षा में दिए गए दुष्ट के आत्मिक गढ़ के सन्दर्भ को समझेंगे।

अपनी पत्री के पहले अध्याय में याकूब कहता है कि दुचित्ता व्यक्ति अपनी सारी बातों में चंचल है। (याकूब 1:8) दुचित्ता व्यक्ति दो भिन्न एवं यहां तक कि दो परस्पर विरोधी विचारों को प्रस्तुत करने की क्षमता रखता है। स्वार्थपूर्ण अभिलाषा के कारण वह व्यक्ति दुचित्ता बना रहता है। (याकूब 3:14) स्वार्थपूर्ण अभिलाषा व्यक्तिगत कार्यसूची की ओर संकेत करती है, जो उसके लिए अतिप्रिय है, और उसे कार्यान्वित करने के लिए अन्य कार्यसूचियों तथा यहां तक कि परमेश्वर की कार्य सूचियों का भी बलिदान करने पर विवश कर देती है। मसीह के प्रति आज्ञाकारी हों या न हों, उसने तो बस यह निर्णय ले लिया है कि अपने विशेष सोच-विचारों (भावनाओं) को नहीं छोड़ेगा।

जब इस प्रकार के व्यक्ति को उपदेशक के रूप में नियुक्ति कर दी जाती है तब शैतान को चर्च में घुसने व उसे प्रभावित करने का अवसर बढ़ जाता है। जैसे कि याकूब 5:9 में चेतावनी दी गयी है; लड़ाई-झगड़े भी इसी तस्वीर के अंग बन जाते हैं। व्यक्तिगत कार्यसूची हमेशा उपदेशक भाइयों के बीच लड़ाई-झगड़े को बढ़ ावा देती है। दोष लगाने वाले, भाइयों के बीच लड़ाई-झगड़े को बढ़ावा देते हैं व स्वयं लड़ते-झगड़ते हैं। वे नहीं जानते कि इस तरह से वे लड़ाई-झगड़े को कितना अधिक विस्तार करते हैं। गलती करने के बाद गलती को मान लेना उतना खतरनाक नहीं होता जितना गलती करने के बाद भी यह विश्वास करना कि वही सही है। इसका खतरा विशेष कर उस समय अधिक होगा जब वह व्यक्ति सत्ता में या प्रभाव डालने वाला हो।

ग- दुष्ट आत्मिक गढ़ों के प्रति क्या करना चाहिए ?:-

2 कुरि० 10:5 के अनुसार, दुष्ट के आत्मिक गढ़ों को निश्चित रूप से ध्वस्त कर देना चाहिए। उनका पुनः निर्माण नहीं करना चाहिए। उन्हें न तो दुबारा सतही तौर पर रंगना चाहिए और न ही दीवारी कागज से ढंकना चाहिए। उन्हें पूर्णतयः ध्वस्त कर देना चाहिए। ऐसा करने के लिए याकूब 4:7-10 के अन्तर्गत हम चार बातें पाते हैं जिनका पालन क्रमानुसार करना चाहिए।-

1. परमेश्वर के अधीन हो जाओ!(याकूब 4:7):-

परमेश्वर के वचन के द्वारा यह तय करें कि परमेश्वर की इच्छा क्या है। उस इच्छा पर विश्वास करें और उन परिस्थितियों के विरोध में अपने मुँह से अंगीकार करें जो परमेश्वर के वचन के विपरीत हैं। ‘‘मेरी नहीं, पर तेरी इच्छा पूरी हो।’’ (मत्ती 26:39) यह प्रभु की प्रार्थना है, यही आपकी भी प्रार्थना होनी चाहिए। उस व्यवधान को अपने मन से उतार फेंकिए जिसके कारण दो परस्पर विरोधी विचारों ने आपके मन को घेर लिया है। अपनी भावनाओं के बावजूद, सत्य को सत्य कहकर पुकारिए। यीशु को अपने जीवन में आमंत्रित कीजिए। ठीक यही संकेत स्वयं यीशु मसीह ने भी लौदीकिया की कलीसिया को दिया था। यह कलीसिया दुष्ट आत्मिक गढ़ के नियंत्रण में इतनी जकड़ गयी थी कि वह वास्तविकता से अलग हो गयी थी। (प्रका० 3:14-21) यदि यह संकेत उनके लिए भला था तो आप के लिए भी भला होगा। मैं यह नहीं चाहता कि आप उसे पुनः उद्धारकर्त्ता के रूप में ग्रहण करें, परन्तु मेरा सुझाव है कि आप यीशु को अपने मन के उस हिस्से में आमन्त्रित करें जहां आपकी बुद्धिसंगत व्याख्याएं तथा निराधार कल्पनाएं राज्य करती हैं।

2. शैतान का सामना करो!(याकूब 4:7):-

शैतान का सामना करने का सबसे प्रभावशाली तरीका अपने पुराने अहं का इंकार करना है। जब आप मसीह में अपना पद ग्रहण करते हैं। (2 कुरि० 5:17, गला० 2:20) तब आप पूर्ण रूप से स्वयं को

शैतान की पहुंच से दूर रखते हैं। मसीह में बने रहने से आपकी निराधार कल्पनाओं पर भी भारी प्रभाव पड़ता है। मसीह में सब कुछ निश्चत और सिद्ध किया हुआ होता है। वचन को कंठस्थ करने के द्वारा अपने मन को नया बना लें। शैतान को कोई रोक नहीं सकता, वह तो पहले के समान कहेगा, ‘‘यह लिखा है।’’ (मत्ती 4:4,7,10) वचन में दी गयी शर्तों को यदि आप पूरा करें और ‘‘शैतान का सामना करें’’ तब जैसा परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है ‘‘शैतान तुम्हारे पास से भाग निकलेगा। (याकूब 4:7)

3. परमेश्वर के निकट आओ!(याकूब 4:8):-

परमेश्वर की ओर वापस आने की आवश्यकता बनी रहती है क्योंकि हम अपनी निराधार कल्पनाओं के कारण परमेश्वर से दूर चले गए हैं। हमारी कुछ निराधार कल्पनाएं उस पूर्ण दूरी को दर्शाती हैं जो हमने परमेश्वर से अलग तय की है। जब हम शैतान की पकड़ से छूटेंगे तो तुरन्त हमें परमेश्वर की ओर लौटने की आवश्यकता पड़ेगी। पीछे मुड़ना काफी नहीं है, परमेश्वर की तरफ बढ़ना भी आवश्यक है।

4. तो परमेश्वर भी तुम्हारे निकट आएगा।(याकूब 4:8):-

अपनी अनाज्ञाकारिता के आकर्षण तथा गहराई को समझ लेने के पश्चात सबसे सामान्य भय उस परमेश्वर द्वारा ठुकराया जाना है जिसे हमने नाराज किया है। इसीलिए परमेश्वर यह प्रतिज्ञा करता है कि हम उसके निकट आएं तो वह भी हमारे निकट आएगा। ‘‘शैतान हमारे पास से भाग निकलेगा।’’ (याकूब 4:7) और ‘‘परमेश्वर हमारे निकट आएगा।’’ (याकूब 4:8) इन दोनों के बीच जरा अन्तर देखिए। कितना बड़ा आश्वासन !परमेश्वर द्वारा सीने से लगाए जाने में ठुकराए जाने का डर हो ही नहीं सकता।

Creation Autonomous Academy

अध्याय -9

अपने आपको जानें

दुश्मन और उसकी शक्ति को जान लेने के बाद, आवश्यक है कि अपने आपको भी जाने और अपनी शक्ति सन्तुलन को पहचानें। हमारी ताकत निम्नलिखित हैं।-

क-परमेश्वर के अस्त्र-शस्त्रः-

अतः प्रभु और उसके सामर्थ्य की शक्ति में बलवान बनो। परमेश्वर के सम्पूर्ण अस्त्र-शस्त्र धारण करो जिससे तुम शैतान की युक्तियों का दृढ़ता पूर्वक सामना कर सको।

हमारा संघर्ष तो मांस और लहू से नहीं वरन् प्रधानों, अधिकारियों अन्धकार की सांसारिक शक्तियों तथा दुष्टता की उन आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं। इसलिए परमेश्वर के समस्त अस्त्र-शस्त्र धारण करो, जिससे तुम बुरे दिन में शैतान का सामना कर सको और सब कुछ पूरा करके स्थिर रह सको।

1. बेल्ट :-

सत्य से अपनी कमर कस लें।

Creation Autonomous Academy

2. झिलमः-

धार्मिकता की झिलम पहन लें।

3. जूतेः-

पैरों में मेल के सुसमाचार की तैयारी के जूते पहिनकर स्थिर रहो।

4. ढालः-

विश्वास की ढाल ले लो जिससे तुम उस दुष्ट के समस्त अग्नि-वाणों को बुझा सको।

5. टोप :-

उद्धार का टोप धारण कर लो।

6. तलवार :-

आत्मा की तलवार, जो परमेश्वर का वचन है ले लो।

प्रत्येक विनती और निवेदन सहित पवित्र आत्मा में निरन्तर प्रार्थना करते रहो। और यह ध्यान रखते हुए सतर्क रहो कि यत्न सहित सब पवित्र लोगों के लिए लगातार प्रार्थना करो। (इफि० 6:10-18)

हमारे हथियार की शक्ति :-

हमारे अस्त्र-शस्त्र ईश्वरीय हैं क्योंकि ये परमेश्वर प्रदत्त हैं!

1. प्रभावशाली हैं।:-

हमारे आत्मिक हथियार शैतान के विरूद्ध प्रभावी हैं। ‘‘क्योंकि हमारे युद्ध के हथियार शारीरिक नहीं परन्तु गढ़ों को ध्वस्त करने के लिए ईश्वरीय सामर्थ्य से परिपूर्ण हैं।’’ (2 कुरि॰ 10:3-4)

2. शक्तिशाली हैं।:-

मेरे हथियार अपने आप में शक्तिशाली नहीं, परन्तु परमेश्वर के द्वारा शक्तिशाली हैं। वे गढों को तोड़ने के लिए पर्याप्त हैं।

3. विजय दिलाने वाले हैं।:-

ये बंधन को छुड़ा सकते हैं। जो कैदी छूटना चाहते हैं उनमें मन-परिवर्तन होना आवश्यक है। स्वतन्त्र किए जाने के लिए उनका मन-परिवर्तन करने की आवश्यकता है। परन्तु कैसे? परमेश्वर के द्वारा -हमारे युद्ध के हथियार ऐसा कर सकते हैं।

ख- संख्या की शक्ति :-

संख्या महत्वपूर्ण है। अधिक संख्या में किस प्रकार के लोग हों?

1. सही लोगों पर निर्भर हों!:-

प्रार्थना द्वारा आत्मिक युद्ध में सही लोगों पर निर्भर हों। बाइबल के कुछ उदाहरणों को देखें।

‘‘एक ही की धमकी से एक हजार भाग खड़े होंगे। पांच की धमकी से तुम ऐसा भागोगे कि पर्वत की चोटी पर के झण्डे तथा पहाड़ी पर की पताका के समान रह जाओगे।’’ (यशा० 30:17)

Creation Autonomous Academy

ये बात अनाज्ञाकारी लोगों से परमेश्वर कह रहा है। यदि परमेश्वर पर निर्भर नहीं हैं तो दुश्मन का एक ही आदमी सिर्फ धमकी देगा और हजार भाग खड़े होंगे।

आत्मिक युद्ध में सही आत्मिक लोग अच्छे हैं। वहीं दूसरी तरफ गलत प्रकार के लोग ठीक नहीं। प्रेरितों 2:41-47 के अनुसार आत्मिक सेना के चरित्र को देखें-

1. वचन को ग्रहण करने वाले।
2. विश्वास करने वाले।
3. बपतिस्मा लिए।
4. सीखने वाले।
5. संगति रखने वाले।
6. रोटी तोड़ने वाले।
7. प्रार्थना करने वाले।
8. मिल-जुलकर रहने वाले।
9. साझेदारी रखने वाले।
10. सबकी आवश्यकता का ख्याल रखने वाले ।

11. एक मन रखने वाले ।
12. प्रतिदिन संगति रखने वाले।
13. एक साथ भोजन करने वाले।
14. परमेश्वर की स्तुति करने वाले।
15. टीम में वृद्धि करने वाले ।
16. प्रतिदिन कार्य करने वाले।

यह चरित्र थे परमेश्वर की आत्मिक सेना के जो जल्द ही पांच हजार लोगों को सुसमाचार सुनाकर जीत लिया। (प्रेरितों० 4:24-31) इनके बीच प्रार्थना में एकता की शक्ति थी। (प्रेरितों० 4:31-35)

2. सही लोग कम संख्या में होते हैं।ः-

गिनती 14:40-45 के अनुसार बड़ी संख्या में लोग थे जो परमेश्वर के साथ सही नहीं थे। जब कनान के भेद की रिपोर्ट प्रस्तुत की गयी मूसा के सामने तो 10 विरूद्ध थे 2 पक्ष में थे। इस्राएली कालेब व यहोशू की रिपोर्ट का पक्ष लेने में असफल हो गए।

3. छोटी संख्या पर ध्यान दें!ः-

यदि प्रार्थना की बैठक का अगुवा एक आत्मिक व्यक्ति है तो वह ईमानदार बने। वह उन लोगों को बुलाएगा जो परमेश्वर के साथ चलना जानते हैं। तब प्रार्थना बैठक आरम्भ करेगा।

प्रश्न है क्या जो अगुवे हैं वे कदम उठाने के लिए पर्याप्त रूप से गम्भीर हैं? क्या आप एक अगुवा हैं जो एक कदम उठा सकते हैं? क्या आप एक अगुवा हैं जो अभी एक कदम उठा सकते हैं?

4 : विश्वासयोग्य योद्धा की आवश्यकता है।ः-

यह वह समय है जब परमेश्वर विश्वासयोग्य लोगों का एक छोटा समूह नहीं पाता। वह मात्र एक व्यक्ति पाता है। बाइबल कहती है 'तुममें से एक ही जन हजार को भगा देता है। क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार तुम्हारी ओर से लड़ता है। (यहोशू 23:10) बाइबल पुनः कहती है 'एलिय्याह भी हमारे ही जैसे स्वभाव का मनुष्य था, और उसने वर्षा न होने के लिए गिड़गिड़कर प्रार्थना की, और साढ़े तीन वर्षों तक धरती पर वर्षा न हुई। उसने फिर प्रार्थना की और आकाश से भारी वर्षा हुई, और भूमि ने अपनी उपज दी। (याकूब 5:17-18)

5ः स्वयं को अर्पण कर विश्वासयोग्य सेना प्राप्त करें।ः-

यदि आपका हृदय परमेश्वर के लिए भूखा -प्यासा है तो परमेश्वर के लिए अपने आपको दें। अपने आपको प्रार्थना के लिए दें। परमेश्वर की आज्ञा आपके द्वारा पूरी होगी। वह आपके साथ होने के लिए एक दूसरे व्यक्ति को खड़ा करेगा। वह दो दूसरे लोगों को खड़ा करेगा। जैसे ही आप परमेश्वर द्वारा तैयार किए गए व्यक्ति को स्वीकार करके उसके साथ प्रार्थना हेतु टीम बनाएंगे, वह निरन्तर चलेगा और आपके पास शीघ्र ही एक विश्वासयोग्य सेना होगी। प्रार्थना में पवित्र लोग। प्रभु की स्तुति हो।

Creation Autonomous Academy

अध्याय-10

आत्मिक मल्लयुद्ध की तैयारी-सुरक्षा

आत्मिक मल्लयुद्ध के लिए तैयारी आवश्यक है। बिना तैयारी के युद्ध नहीं जीता जा सकता।

क-हमला करने के पहले तैयारी करें।:-

हमारा युद्ध शत्रु शैतान और उसकी सेनाओं से है। युद्ध क्षेत्र प्रथम हमारा स्वयं का मन है। जहां शैतान अपने दुष्ट गढ़ स्थापित करके रखता है। इन गढ़ों पर सर्वप्रथम हमला करना और उन्हें ध्वस्त करना आवश्यक है। दूसरा क्षेत्र है संसार जिसमें शैतान की गुलामी में पड़े हुए लोग हैं।

शैतान के विरुद्ध युद्ध के लिए परमेश्वर की सेना विश्वासियों का समूह अर्थात कलीसिया है।

1-परमेश्वर का मार्गदर्शन प्राप्त करें।:-

परमेश्वर ने हमें मेल मिलाप की सेवा और मेल मिलाप का वचन सौंपा है। (2 कुरि० 5:18-19) परमेश्वर हमसे व कलीसिया से यह चाहता है कि मनुष्यों का उसके साथ मेल-मिलाप कराएं।

जब हम आत्मा में चलते हैं, तो हम अपने युद्ध के हथियारों का उचित प्रयोग करना सीख जाते हैं।

परमेश्वर हमें करने के लिए कुछ कार्य देता है। हमको अपना कार्य याद रखने में सावधान रहना है। क्रूस पर देखना है और शैतान की पराजय को भी देखना है। तब हमें उसी आधार पर युद्ध करने के लिए बढ़ना है, जैसे प्रभु अगुवाई करे।

हमारा कार्य यह नहीं है कि हम परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह उनका उद्धार करे जिनकी हम चिन्ता करते हैं। उनको बचाने के लिए यीशु ने पहले ही अपना लहू बहा दिया है। अब उसने हमें मेल-मिलाप की सेवा और वचन दिया है। अतः हमें खोए हुओं को बचाने के लिए इन हथियारों का प्रयोग करना चाहिए। आओ हम बाहर जाएं और यह करें। हम असहाय नहीं हैं। हमारे हथियार कार्य करेंगे।

2-परमेश्वर की सहायता प्राप्त करें।:-

इसे अपनी प्रार्थना बनाओः 'प्रभु यीशु के नाम में, मैं उन दृढ़ गढ़ों के विरुद्ध आता हूं जो शैतान ने अमुक व्यक्ति के मन में बना दिए हैं। मैं उन प्रत्येक गढ़ों को और प्रत्येक उस ऊंची चीज को गिराता हूं जो उसके मन में हैं, जो स्वयं को परमेश्वर के ज्ञान से ऊपर उठाती है। और जैसे ही मैं उस मन को मसीह की आज्ञा मानने के लिए मुक्त करता हूं, मैं इसे मुक्त करता हूं जिससे इसका परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप हो। आमीन।'

अब एक महीने तक ऐसा ही करें। आप विश्वास से विश्वास की ओर और विजय से विजय की ओर जाएंगे।

Creation Autonomous Academy

ख-अपने किले पर सुरक्षा स्थापित करें।:-

तैयारी का एक भाग अपने किले पर सुरक्षा स्थापित करना भी है। यह सुरक्षा भी अत्यन्त आवश्यक है। और यह है बाड़ा बांधना।

बाड़ा बांधनाः-

ऊज देश में अय्यूब नाम एक पुरुष था। वह निर्दोष, खरा तथा परमेश्वर का भय मानने वाला था, और बुराई से दूर रहता था। उसके सात पुत्र और तीन पुत्रियां हुईं। फिर उसके पास सात हजार भेड़ें, तीन हजार ऊंट, पांच सौ जोड़े बैल, पांच सौ गदहियां तथा बहुत से नौकर -चाकर थे। वह पूर्व के लोगों में सबसे बड़ा था।

उसके पुत्र बारी-बारी से एक दूसरे के घर जाया करते और भोज किया करते थे, तथा वे अपनी तीनों बहनों को अपने साथ खाने पीने के लिए बुलवा भेजते थे। जब-जब भोजों के दिनों का क्रम समाप्त हो जाता तब-तब अय्यूब उन्हें बुलवाकर पवित्र करता और बड़े तड़के उठकर उन सब की गिनती के अनुसार होमबलि चढ़ाता था, क्योंकि अय्यूब सोचता था, 'सम्भवतः मेरे पुत्रों ने पाप किया हो और अपने मन में परमेश्वर की निन्दा की हो।' अय्यूब निरन्तर इसी प्रकार किया करता था।

एक दिन यहोवा परमेश्वर के पुत्र उसके सामने उपस्थित हुए। उनके साथ शैतान भी आया। तब यहोवा ने शैतान से पूछा, 'तू कहां से आया है?' शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, 'पृथ्वी पर इधर-उधर घूमते फिरते और डोलते डालते आया हूं।' यहोवा ने शैतान से कहा, 'क्या तूने मेरे दास अय्यूब पर ध्यान दिया है?' क्योंकि पृथ्वी पर उसके समान निर्दोष और खरा, तथा परमेश्वर का भय मानने और बुराई से दूर रहने वाला अन्य कोई नहीं।' तब शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया,'क्या अय्यूब परमेश्वर का भय अकारण मानता है? क्या तूने उसके तथा उसके घर के और जो कुछ उसका है उसके चारों ओर बाड़ा नहीं बांध रखा है? तूने उसके हाथ के काम पर आशीष दी है और देश में उसकी सम्पत्ति बढ़ गयी है। (अय्यूब 1:1-10)

परमेश्वर ने बाड़ा बांधाः-

शैतान ने चिन्हित किया कि परमेश्वर ने अय्यूब के चारों तरफ बाड़ा बांधा है। उसके परिवार के चारों तरफ और जो कुछ उसके पास है उसके चारों तरफ। परमेश्वर ने प्रत्येक विश्वासी के चारों तरफ बाड़ा बांधा है, प्रत्येक विश्वासी के परिवार के चारों तरफ, और जो कुछ प्रत्येक विश्वासी के पास है उसके प्रत्येक तरफ बाड़ा बांधा है।

एक बाड़ाः विश्वासी के चारों तरफः-

परमेश्वर ने विश्वासियों के आत्मा, प्राण, देह के चारों तरफ एक बाड़ा बांधा है। उसने विश्वासी के आत्मिक जीवन के चारों तरफ एक बाड़ा बांधा है। उसने निम्नलिखित के चारों तरफ एक बाड़ा बांधा है।

1. विश्वासी की परमेश्वर के साथः -

सहभागिता, विवेक, प्रार्थना का जीवन, बाइबल अध्ययन का जीवन, सुसमाचार प्रचार, चरित्र, आत्मिक सेवा, परमेश्वर को देना, आराधना, आत्मिक वरदान, संसार के प्रति व्यवहार-दृष्टिकोण, वचन के प्रति व्यवहार-दृष्टिकोण, पाप के प्रति दृष्टिकोण, स्वयं के प्रति व्यवहार-दृष्टिकोण, हानि के प्रति व्यवहार-दृष्टिकोण, अधिकारियों के प्रति व्यवहार और विश्वासी के जीवन के अन्य क्षेत्रों पर।

2. विश्वासी का भौतिक शरीर और स्वास्थ्यः-

हृदय, फेफड़े, लीवर, किडनी, मस्तिष्क, हड्डियां, मांसपेशियां, नसें, आंखें, मुंह, नाक, चेहरा, हाथ, पैर, चमड़ा सब कुछ।

3. विश्वासी का परिवारः-

पत्नी, पुत्रों, पुत्रियों, सम्बन्धियों, सेवकों, सब कुछ।

4. विश्वासी की स्थिति (श्रेणी): -

घर, कार, सेवा, बगीचा, फ्रिज, व्यापार, मित्र, धन, सम्बन्ध, सब कुछ।

Creation Autonomous Academy

प्रभु ने विश्वासी के चारों तरफ एक बाड़ा बांधा है। उसने उसके चारों तरफ और जो कुछ विश्वासी के पास है उन सब के चारों तरफ बाड़ा बांधा है। आप निश्चित हो जाएं प्रभु ने इसे पूरा कर दिया है।

एक बाड़ाः विश्वासी के प्रत्येक तरफः-

परमेश्वर ने विश्वासी के बारे में मात्र एक बाड़ा ही नहीं बांधा है। उसने विश्वासी के प्रत्येक तरफ एक बाड़ा बांधा है। इसका अर्थ है परमेश्वर द्वारा एक बाड़ा बांधा गया है बाएं, दाएं, सामने, पीछे, विश्वासी के, उसके परिवार के और वह सब जो उसके पास है। यह बाड़ा सभी दिशाओं से ढांपता है। उन सभी दिशाओं की तरफ से जहां से विश्वासी पर शत्रु का आक्रमण हो सकता है। विश्वासी के चारों ओर 6 बाड़े हैं। परमेश्वर ने कुछ भी असुरक्षित नहीं छोड़ा है।

परमेश्वर ने बाड़ा क्यों बांधा है?ः-

शैतान के आक्रमण से विश्वासी की सुरक्षा के लिए परमेश्वर ने बाड़ा बांधा है।

शरीर का जो भाग विश्वासी के लिए अत्यन्त उपयोगी है शैतान उसी पर आक्रमण करता है। उदाहरण के लिए शैतान उस विश्वासी के हाथों को पहले नष्ट करने का प्रयत्न करेगा जो पुस्तकें लिखता है। उसके बाद वह लेखक के पैरों को नष्ट करने का प्रयत्न करेगा। पहले वह दाहिने हाथ को नष्ट करेगा तब बाएं हाथ को नष्ट करने का प्रयत्न करेगा। वह जानता है कि लेखक के लिए दाहिना हाथ कितना उपयोगी है।

बाइबल कहती है, 'संयमी और सचेत रहो। तुम्हारा शत्रु शैतान गर्जने वाले सिंह की भांति इस ताक में रहता है कि किसको फाड़ खाए। विश्वास में दृढ़ रहकर उसका विरोध करो, और यह जान लो कि तुम्हारे भाई जो संसार में हैं इसी प्रकार की यातना सह रहे हैं। (1 पत० 5:8-9)

शैतान जिस भाग को असुरक्षित पाता है उस पर हमला करता है और जिस भाग को सुरक्षित पाता है वहां से चला जाता है। परमेश्वर ने विश्वासी, उसके परिवार और जो कुछ उसके पास है सबके चारों ओर बाड़ा बांधा है।

विश्वासी बाड़ा बांधेः-

परमेश्वर ने मनुष्य के चारों तरफ, उसके परिवार व जो कुछ उसके पास है सब कुछ के चारों तरफ बाड़ा बांधा है। उसने इसे पूरा कर दिया है। परन्तु विश्वासी के लिए भी आवश्यक है कि वह बाड़ा बांधे। विश्वासी दो पर्त का बाड़ा बांधेः 1 -परमेश्वर के प्रेम और उसकी दया में 2 -प्रार्थना में। यदि विश्वासी बाड़ा बांधने में चूकता है तो शत्रु उस पर हमला करेगा। प्रभु यीशु चाहता है कि विश्वासी उसका सहयोग करे। वह कहता है, 'मैं तुमसे कहता हूं, जो कुछ तुम पृथ्वी पर बांधोगे, वह स्वर्ग में बंधेगा। और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे, वह स्वर्ग में खुलेगा।' विश्वासी स्वयं अपने, अपने परिवार के, जो कुछ उसके पास है उस सब के चारों तरफ बाड़ा बांधे। शत्रु को बाहर रखे। परमेश्वर ने स्वयं विश्वासी, उसके परिवार व जो कुछ उसके पास है सब के चारों ओर बाड़ा बांध रखा है।

जब शत्रु आता है और मात्र परमेश्वर द्वारा बांधे गए बाड़े को पाता है। और विश्वासी द्वारा बांधा गया बाड़ा नहीं देखता अर्थात विश्वासी ने बाड़ा नहीं बांधा है। तो वह आक्रमण करता है।

स्किवा के पुत्रों को दुष्टात्मा ने उत्तर दिया, 'यीशु को मैं जानती हूं, और पौलुस को भी पहचानती हूं, पर तुम कौन हो?' (प्रेरितो० 19:15) वे आज यह कह सकती हैं, 'यीशु द्वारा बांधे गए बाड़े को मैं देख रही हूं, लेकिन तुम्हारे द्वारा बांधा गया बाड़ा कहां है?' जब वह विश्वासी द्वारा बांधे गए बाड़े को नहीं पाती तो आक्रमण करती है। (प्रेरितो० 19:16) बहुत सारे लोग आक्रमण के शिकार हैं क्योंकि उन्होंने अपने चारों तरफ बाड़ा नहीं बांधा है। परमेश्वर मौका देता है कि जो आज्ञा उसने विश्वासी को करने के लिए दिया है वह उसे करे।

Creation Autonomous Academy

I. अपने स्वयं के चारों तरफ बाड़ा बांधो!:-

आपकी कई चीजें हैं जिनको सुरक्षा की आवश्यकता है। इसलिए अपने स्वयं के चारों तरफ एक बाड़ा बांधें।

1.परमेश्वर के लिए प्रेमः -

यदि आप प्रभु से अपने सम्पूर्ण हृदय से प्रेम करते हैं तो उसके प्रेम के लिए उसे धन्यवाद दें, और उसे सुरक्षित करें। निश्चिन्त न हों शत्रु हमला कर सकता है। कृपया प्रभु के साथ रहें, उसके प्रेम में बढ़ते जाएं, वह सुरक्षित रखेगा।

2. वचन में बना रहने व प्रभु का भय मानने वाला हृदयः -

यदि आप वास्तव में ऐसा हृदय रखते हैं, तो इसके लिए परमेश्वर को धन्यवाद दें और इसे सुरक्षित रखें। यदि आप ऐसा करते हैं तो इस प्रकार के हृदय को आप व्यवस्थित करते हैं। यदि आप इसे सुरक्षित नहीं करते, तो आप पाएंगे कि शैतान आपको एक दिन बाहर ले जाएगा और प्रभु से दूर ले जाएगा। एक बुलाया हुआ हृदय प्रेम सहित सेवा व प्रभु के लिए प्रेम को पुनः स्थापित करता है। यह प्रभु से प्रार्थना करने को पुनः स्थापित करता है। यह बाइबल पढ़ने के साथ वचन पर मनन करने को पुनः स्थापित करता है।

3. प्रभु के प्रति आज्ञाकारी हृदयः-

यदि आप ऐसा हृदय रखते हैं तो इसके चारों तरफ एक बाड़ा बांधिए। यदि आप ऐसा करते हैं तो शत्रु के आक्रमण से एक आज्ञाकारी हृदय को बचाते हैं।

4. सत्य की शिक्षा जो वचन सिखाता हैः-

जो कुछ वचन से सीखा है उसके चारों तरफ एक बाड़ा बांधें। यदि प्रभु ने दर्शन दिया है तो प्रार्थना करें और दर्शन की सुरक्षा करें। ऐसा करने पर शत्रु उसे छीनने के लिए नहीं आएगा।

5. परमेश्वर द्वारा दिए गए दर्शन के चारों तरफ बाड़ा बांधेंः-

दर्शन महत्वपूर्ण है। परमेश्वर ने अपने संतानों को जो दर्शन दिया है, शत्रु उन्हें उससे बाहर ले जाने का प्रयत्न करता है। परमेश्वर ने आपको जो दर्शन दिया है वह स्पष्ट है इसके प्रति निश्चित हों। उसे लिख लें और निरन्तर प्रार्थना में उसकी सुरक्षा करते रहें। जब तक दर्शन वास्तविक न हो जाए।

6. अपनी बुलाहट के चारों तरफ बाड़ा बांधेंः-

Creation Autonomous Academy

आपके जीवन में परमेश्वर के बुलाहट के प्रति जो योजना है उसके चारों तरफ एक बाड़ा बांधें। क्योंकि शत्रु इस पर आक्रमण कर सकता है।

7. परमेश्वर ने जो कार्य सौंपा है उसके चारों तरफ बाड़ा बांधेंः-

परमेश्वर ने जिस कार्य को करने के लिए बुलाया है, उस कार्य के चारों तरफ एक बाड़ा बांधें। क्योंकि शत्रु उस कार्य को करने से आपको रोकेगा।

8. प्रत्येक नये आत्मिक अनुभव के चारों तरफ एक बाड़ा बांधेंः-

प्रत्येक नए आत्मिक अनुभव के बाद विश्वासी परमेश्वर से प्रार्थना करे।

II. अपने परिवार के चारों तरफ एक बाड़ा बांधो!ः-

हम पहले ही कह चुके हैं कि जिन क्षेत्रों में हम अच्छी स्थिति में हैं उनके चारों तरफ बाड़ा बांधना अत्यन्त आवश्यक है। शत्रु के आक्रमण से सुरक्षा के लिए बाड़ा आवश्यक है। अपने परिवार के चारों तरफ एक बाड़ा बांधकर कुछ चीजों को सुरक्षित करने की आवश्यकता है निम्नलिखित महत्वपूर्ण क्षेत्रों की सुरक्षा करना आवश्यक है।

1. पति की शक्ति का क्षेत्रः-

यदि पति अपनी पत्नी व बच्चों को क्षमा करने में दृढ़ है तो यह धन्यवाद का एक विषय है। इसके चारों तरफ एक बाड़ा बांधें। यदि यह सुरक्षित नहीं है, तो शत्रु पुरुष की क्षमा की क्षमता पर आक्रमण करेगा। इस रास्ते से वह पुरुष में क्षमाहीनता ले आएगा।

2. पत्नी की शक्ति का क्षेत्रः-

पति की भांति पत्नी के शक्ति क्षेत्रों की सुरक्षा आवश्यक है उसके चारों तरफ एक बाड़ा बांधें।

3. प्रत्येक व्यक्ति के शक्ति के क्षेत्रः-

प्रत्येक बच्चे और परिवार के प्रत्येक व्यक्ति की शक्ति के क्षेत्र के चारों तरफ एक बाड़ा बांधें।

4. परिवार के सदस्यों के अन्य शक्ति के क्षेत्रः-

परिवार के सदस्यों के सभी शक्ति के क्षत्रों के चारों तरफ एक बाड़ा बांधें।

5. आपसी प्रेम के चारों तरफ बाड़ा बांधेंः-

यदि जोड़ा विवाह के बाद लम्बे समय तक प्रेम करता है तो धन्यवाद का विषय है। एक दूसरे के प्रति प्रेम करने के चारों तरफ एक बाड़ा बांधें।

6. परिवार के स्वास्थ्य के चारों तरफ बाड़ा बांधेंः-

यदि पति-पत्नी और परिवार का स्वास्थ्य अच्छा है तो यह धन्यवाद का विषय है। परिवार के प्रत्येक सदस्य के स्वास्थ्य के चारों तरफ बाड़ा बांधें।

7. परिवार के कठिन परिश्रम के चारों तरफ बाड़ा बांधेंः-

यदि पति-पत्नी और बच्चे कठिन परिश्रम कर रहे हैं तो धन्यवाद का विषय है। इसके चारों तरफ एक बाड़ा बांधें।

8. पति के विशेष प्रेम के चारों तरफ बाड़ा बांधेंः-

यदि पति अपनी पत्नी से एक विशेष तरीके से प्रेम करता है तो यह स्तुति और धन्यवाद का विषय है। इस विशेष प्रेम के चारों तरफ एक बाड़ा बांधें।

9. जीवन साथी की शारीरिक सुन्दरता के चारों तरफ बाड़ा बांधेंः-

यदि जीवन साथी शारीरिक रुप से विशेष सुन्दर है तो वे इसके लिए परमेश्वर को धन्यवाद दें और मेमने के लहू के नीचे इसे सुरक्षित करें। इसके चारों तरफ एक बाड़ा बांधें।

10. परिवार के प्रत्येक सदस्य के हृदय के चारों तरफ बाड़ा बांधेंः-

परिवार के प्रत्येक सदस्य के हृदय के चारों तरफ एक बाड़ा बांधें। शत्रु के आक्रमण से हृदय को सुरक्षित करें।

11. पति-पत्नी के आपसी विश्वासयोग्यता के चारों तरफ बाड़ा बांधेंः-

पति की अपनी पत्नी के प्रति और पत्नी की अपने पति के प्रति विश्वासयोग्ता को सुरक्षित करने की आवश्यकता है। इसके चारों तरफ बाड़ा बांधें।

12. पति-पत्नी के योन सम्बन्ध के चारों तरफ बाड़ा बांधेंः-

यदि पति-पत्नी योन जीवन में परिपूर्णता पाते हैं, तो यह धन्यवाद का विषय है। इसे सुरक्षित करें, इसके चारों तरफ एक बाड़ा बांधें। यह प्रभु का एक वरदान है जो बहुत सारी आशीषें ले आता है।

13. परिवार की आवासीय सुविधा के चारों तरफ बाड़ा बांधेंः-

यदि परिवार आवासीय सुविधा प्रदान करता है, तो इसे सुरक्षित करें। क्योंकि शत्रु बहुत सारी चीजों की मांग करने वाले मेहमानों को ले आता है, जिसके द्वारा हताशा आती है, जो शत्रु का हथियार है।

III. अपनी सम्पत्ति के चारों तरफ एक बाड़ा बांधें!ः-

सम्पत्ति को असुरक्षित रखना मूर्खता है। परमेश्वर अय्यूब की सम्पत्ति के चारों तरफ बाड़ा बांधने के प्रति सावधान था। उसने आपकी सम्पत्ति के चारों तरफ बाड़ा बांधा है। जैसे परमेश्वर ने पूरा किया है वैसे आप भी उठें और अपनी सम्पत्ति के चारों तरफ बाड़ा बांधें। अपनी सम्पत्ति के चारों तरफ बाड़ा बांधने के लिए, आपको यह जानने की आवश्यकता है कि आपके पास क्या है। मेरी शिफारिस है कि आप अपनी सम्पत्ति की प्रत्येक वस्तु को लिख लें।

1. घर
2. प्लाट
3. रेफ्रिजरेटर
4. फ्रीजर
5. कुकर
6. वाशिंग मशीन
7. बर्तन
8. प्लेट
9. चाकू
10. कांटा
11. चम्मच
12. किचेन सामग्री
13. बेड
14. कम्बल
15. चादरें
16. कमीज
17. पैन्ट
18. कोट
19. टाई
20. कुर्सियां
21. मेज
22. कबोर्ड
23. बाक्स
24. जूते
25. नौकरी
26. फार्म
27. जानवर
28. चिड़ियां
29. बैंक में रुपया
30. घर में नकद रुपया
31. कम्प्यूटर्स
32. टाइप राइटर
33. बुक्स
34. फाइलें
35. आलमारियां
36. स्टूल
37. सी डी/डी वी डी
38. फोन/मोबाइल
39. अन्य

Creation Autonomous Academy

IV. अपनी शक्ति के चारों तरफ एक बाड़ा बांधो!:-

प्रत्येक विश्वासी के पास शक्ति है। शिमशोन के पास शक्ति थी, जिसने उसके मस्तिष्क को बन्द कर दिया। बाइबल बताती है दलीला ने शिमशोन से कहा, 'तू कैसे कह सकता है, मैं तुझसे प्यार करता हूं, जबकि तेरा मन मुझसे नहीं लगा है। तूने इन तीनों बार मुझे धोखा दिया है और अपने महाबल का भेद मुझे नहीं बताया।' फिर ऐसा हुआ कि उसने प्रतिदिन बातें करते हुए उससे इतना आग्रह किया कि उसके नाक में दम आ गया। तब जो कुछ उसके मन में था उसने उस स्त्री से कह दिया, 'मेरे सिर पर उस्तरा कभी नहीं फिरा है क्योंकि मैं अपनी माता के गर्भ ही से परमेश्वर का नाजिर हूं। यदि मेरा सिर मुड़ा दिया जाए तो मेरा बल जाता रहेगा और मैं बलहीन होकर साधारण मनुष्य सा हो जाऊंगा।'

जब दलीला ने देखा कि उसने अपने मन का भेद मुझसे कह दिया है तो उसने पलिश्तियों के सरदारों के पास कहला भेजा, 'एक बार फिर आओ, क्योंकि उसने अपने मन का सब भेद मुझे बता दिया है। तब पलिश्तियों के सरदार अपने हाथों में रुपये लिए हुए उसके पास आए। उस स्त्री ने उसे अपने घुटनों पर सुला दिया और एक मनुष्य को बुलवाकर उसके सिर की सातों लटें मुड़वा डालीं। तब वह उसको सताने लगी क्योंकि उसका बल जाता रहा। तब उसने कहा, 'हे शिमशोन, पलिश्ती तेरी घात में हैं।' तब उसने नींद से जागकर कहा, 'मैं पहले की तरह बाहर जाकर झटकूंगा और स्वतन्त्र हो जाऊंगा।' परन्तु वह न जानता था कि यहोवा उसके पास से चला गया है। तब पलिश्तियों ने उसे पकड़ कर उसकी आंखें निकाल डालीं। फिर वे उसे गाजा को ले गए और उसे पीतल की जंजीरों से जकड़ दिया। और बन्दीगृह में वह चक्की पीसने लगा। (न्यायियों 16:15-21)

शिमशोन ने अपनी सामर्थ्य के चारों तरफ बाड़ा नहीं बांधा इसलिए शैतान के आक्रमण का शिकार हुआ।

हम पहले ही कह चुके हैं कि प्रत्येक विश्वासी के पास शक्ति है। यह सामर्थी है।-

- स्पष्ट दर्शन
- स्पष्ट सोच विचार
- स्पष्ट निर्णय

उपलब्धताः

- दूसरों को परमेश्वर के पास ला सकता है।
- एक टीम बनाकर दूसरों की अगुवाई कर सकता है।
- गाना
- बजाना
- धन कमाना

सेवकाई का वरदानः

- प्रेरित
- भविष्यद्वक्ता
- प्रचारक
- पास्टर
- शिक्षक

आत्मिक वरदानः

- वचन का ज्ञान
- राज्य का वचन
- भविष्यद्वाणी
- अन्य भाषा
- अन्य भाषा का अनुवाद
- विश्वास
- चंगाई और आश्चर्यकर्म

Creation Autonomous Academy

वृद्धि का वरदानः

- भविष्यद्वाणी
- शिक्षा
- सम्बन्ध बनाना
- दया
- प्रोत्साहन
- सहायता और दान देना

मसीही चरित्र में विशेष विकासः

- प्रेम
- शांति
- धैर्य
- दया
- भलाई
- विश्वासयोग्ता
- दु:ख उठाना

भौतिक रुप से अच्छा दिखनाः

- याददाश्त
- बहुत उच्च विकसित मस्तिष्क
- दृढ़ आज्ञा

इन प्रत्येक क्षेत्रों को जो शक्ति के हैं परमेश्वर के राज्य के लिए पहले उपयोग करें एवं परमेश्वर के उद्देश्य के अन्तर्गत उपयोग करें। ये परमेश्वर द्वारा शत्रु के आक्रमण से सुरक्षित किए गए हैं, परन्तु इनके चारों तरफ एक बाड़ा बांधें। क्योंकि शैतान आपकी शक्ति को बड़ी सरलता से अपने उद्देश्य के लिए उपयोग कर सकता है। आपकी शक्ति पर आक्रमण करने हेतु शत्रु सक्रियतापूर्वक चालाकी से योजना बनाता है जिससे कि आप उसकी सेवा में रुचि रखें।

1. अपनी शक्ति को जानेंः-

पहले अपनी शक्ति को जानना है, इसके पहले कि इसके चारों तरफ बाड़ा बांधें। दलीला ने शिमशोन से कहा, 'कृपा करके मुझे बता कि तेरे महाबल का भेद क्या है और किस प्रकार तुझे वश में करके यातना दी जा सकती है?' (न्यायियों 16:6)

प्रत्येक विश्वासी जो अपनी शक्ति को नहीं जानता परमेश्वर से पूछे, 'मेरे प्रभु मुझे बता मेरी शक्ति कहां है?' परमेश्वर उसे दिखाएगा। वह उससे पूछ सकता है जो उसे अच्छी तरह से जानता है। वह स्वयं से पूछ सकता है, 'प्रभु के लिए मेरी सेवा क्या है?' ये प्रश्न विश्वासी को अपनी शक्ति को जानने में मदद करेंगे।

कुछ लोग दो या दो से अधिक शक्ति के क्षेत्र रखते हैं प्रत्येक सुरक्षित है। शत्रु एक -एक व्यक्ति का अध्ययन करता है कि उसकी शक्ति का केन्द्र बिन्दु कहां पर है। तब वह आक्रमण करता है। यदि विश्वासी की शक्ति सुरक्षित नहीं है तो वह उस पर आक्रमण करके उसे ढहा देता है।

शिमशोन की शक्ति पर शत्रु ने आक्रमण कर उसे नष्ट कर दिया। आप चेतावनी ग्रहण करें, शक्ति को सुरक्षित करने के लिए आज ही कुछ करें।

2. अपनी शक्ति के चारों तरफ बाड़ा बांधेंः-

यह पर्याप्त नहीं है कि आप अपनी शक्ति को जानें। आवश्यक है कि इन जानकारियों को व्यवहार में लाएं। अपनी शक्ति के चारों तरफ बाड़ा बांधें।

Creation Autonomous Academy

बाड़ा बांधने का एक उदाहरणः जिसने प्रार्थना द्वारा अपनी शक्ति के चारों तरफ बाड़ा बांधा निम्न है।-

1. प्रभु मानसिक शक्ति देने के लिए आपको धन्यवाद।
2. मेरी शक्ति को बताने के लिए आपको धन्यवाद।
3. भूतकाल में जो शक्ति मैंने आपकी महिमा के लिए उपयोग किया उसके लिए आपको धन्यवाद।
4. भूतकाल में मानसिक शक्ति के दुरुपयोग के लिए मुझे क्षमा करें।
5. प्रभु यीशु के नाम में, मैं अपने मस्तिष्क के चारों ओर बाड़ा बांधता हूं। इसलिए कि शैतान मुझे अपने उद्देश्य के लिए उपयोग न कर सके।

    क-घमण्ड
    ख-सुन्दरता आपकी महिमा के लिए हो।
    ग-पवित्रता पर भरोसा हो।
    घ-आप पर भरोसा हो। (नीति० 3:5-6)
    च-आपके भय में जीवन हो।
    छ-मेरे मस्तिष्क में पवित्रता हो।

6. प्रभु यीशु के नाम में मैं अपने मस्तिष्क के चारों ओर एक बाड़ा बांधता हूं। प्रभु यीशु के नाम में मैं स्वयं को सुरक्षित करता हूं। निम्नलिखित आवश्यकताएं जो मेरे मस्तिष्क की हैं:

    1-----------------------------2--------------------------3-------------------------

7. प्रभु यीशु के नाम में मैं अपने शरीर के चारों तरफ एक बाड़ा बांधता हूं, प्रत्येक दुर्घटना से सुरक्षा के लिए मैं दावा करता हूं।
8. प्रभु यीशु के नाम में मैं जो हूं और जो कुछ मेरे पास है सब कुछ परमेश्वर को सौंपता हूं कि अपने राज्य के लिए मेरे मस्तिष्क को उपयोग करे और शैतान के राज्य को गिरा दे। आमीन

V. अपनी कमजोरियों के चारों तरफ एक बाड़ा बांधोः-

प्रत्येक विश्वासी के पास कमजोरियां हैं। इन कमजोरियों पर शत्रु शैतान बड़ी सरलता से हमला कर सकता है। यहां तीन क्षेत्र हैं जहां पर व्यक्ति कमजोर हो जाता है। धन के क्षेत्र में अथवा स्त्री के प्रेम के क्षेत्र में अथवा प्रसिद्धि में। किसी ने कहा है एक विश्वासी इन तीन में से एक में गिर जाता है, जिनका प्रतिनिधित्व 'F' अक्षर द्वारा होता है।

F: Fortunes धन
Females स्त्री
Fame प्रसिद्धि

अथवा अक्षर 'G' द्वाराः

G: Gold सोना
Girls लड़कियां
Glory महिमा

मेरा बिन्दु मुझे स्पष्ट करने दीजिए, हम इस्राएल के महान राजा को औरत के साथ एक समस्या में देखते हैं। वह धन की परीक्षा में नहीं पड़ा, अथवा वह प्रसिद्धि की परीक्षा में नहीं पड़ा। उसकी समस्या स्त्री थी।

Creation Autonomous Academy

शाऊल ने दाऊद से प्रेम नहीं किया बल्कि वह उसे मार डालना चाहता था। बाइबल बताती है,‘जब दाऊद पलिश्ती को मारकर लौट रहा था तब स्त्रियां इस्राएल के सब नगरों से निकलकर वाद्ययंत्रों और डफ की ताल में आनन्द के साथ नाचती -गाती हुई शाऊल राजा से भेंट करने आ निकलीं। वे स्त्रियां नाचती और यह गीत गाती गयीं:

‘शाऊल ने मारा हजारों को,
दाऊद ने मारा लाखों को।’

तब शाऊल अति क्रोधित हुआ क्योंकि यह कहावत उसको बहुत बुरी लगी। उसने कहा, ‘दाऊद को तो उन्होंने लाखों का श्रेय दिया है, परन्तु मुझको केवल हजारों का।’ अब उसको राज्य के अतिरिक्त और क्या मिलना शेष रह गया है? उस दिन से शाऊल दाऊद को संदेह की दृष्टि से देखने लगा।

दूसरे ही दिन से ऐसा हुआ कि परमेश्वर की ओर से एक दुष्टात्मा शाऊल पर प्रबलता से उतरी और वह अपने घर के बीच में चिल्लाने- चीखने लगा। शाऊल के हाथ में भाला था, और दाऊद प्रतिदिन के समान अपने हाथ से बीणा बजा रहा था। तब शाऊल ने यह सोचकर भाला फेंककर मारा कि, ‘मैं दाऊद को दीवार में बेध दूंगा।’ परन्तु दाऊद उसके सामने से दोनों बार हट गया। इससे शाऊल दाऊद से डरने लगा क्योंकि यहोवा दाऊद के साथ था, परन्तु शाऊल के पास से अलग हो गया था। इसलिए, शाऊल ने उसे अपने पास से अलग करके सहस्रपति नियुक्त कर दिया। और वह प्रजा के सामने आने जाने लगा। दाऊद अपने सब कामों में अत्यधिक सफल होता जाता था क्योंकि यहोवा उसके साथ था। जब शाऊल ने देखा कि दाऊद बहुत सफल होता जाता है तब वह उससे बहुत भयभीत रहने लगा। परन्तु सब इस्राएल और यहूदा के समस्त लोग दाऊद से प्रेम करते थे, और वह युद्ध में उनकी अगुवाई करता था। (1 शमू० 18:6-16)

दाऊद जानता था कि शाऊल उससे प्रेम नहीं करता है। वह शाऊल के विषय में सब कुछ जानता था, लेकिन उसने कुछ नहीं किया, क्योंकि उसका प्रेम स्त्री के लिए था। बाइबल कहती है, ‘तब शाऊल ने दाऊद से कहा, ‘यह मेरी बड़ी पुत्री मेरब है। उसे मैं तेरी पत्नी होने के लिए दे दूंगा। तू मेरे लिए केवल इतना कर कि वीर पुरुष बनकर यहोवा का संग्राम लड़।’ क्योंकि शाऊल ने सोचा, ‘मैं अपना हाथ उस पर नहीं उठाऊंगा। पलिश्तियों ही का हाथ उस पर पड़े।’ परन्तु दाऊद ने शाऊल से कहा, ‘मैं कौन हूं? मेरा जीवन क्या है? या इस्राएल में मेरे पिता का परिवार क्या है कि मैं राजा का दामाद बनूं?’ तब ऐसा हुआ कि जिस समय शाऊल की पुत्री मेरब का विवाह दाऊद के साथ होना चाहिए था, तो वह महोलत- वासी अद्रीएल को ब्याह दी गयी। (1 शमू० 18:17-19)

दाऊद ने कहा वह राजा का दामाद बनने के योग्य नहीं था। वह कैसे शाऊल की पुत्री से विवाह करने की आशा रखे। वह खतरनाक भूमि पर था, लेकिन उसका स्त्री के लिए प्रेम उसे धोखा दिया।

बाइबल कहती है, ‘अब शाऊल की पुत्री, मीकल, दाऊद से प्रेम करने लगी। जब इसका समाचार शाऊल को दिया गया तब वह सहमत हो गया। शाऊल ने सोचा, ‘मैं उसे उसको दे दूंगा जिससे कि वह उसका फंदा बने और पलिश्तियों का हाथ उसके विरुद्ध उठे।’ इसलिए, शाऊल ने दाऊद से कहा, ‘आज यह तेरा दूसरा अवसर है कि तू मेरा दामाद बने।’ तब शाऊल ने अपने कर्मचारियों को आदेश दिया, ‘दाऊद से गुप्त रुप से कहो कि, ‘सुन, राजा तुझसे प्रसन्न है और उसके सब कर्मचारी तुझसे प्रेम करते हैं। इसलिए अब तू राजा का दामाद बन जा।’ अतः शाऊल के कर्मचारियों ने दाऊद के कानों में यह बात कही। परन्तु दाऊद ने उत्तर दिया, ‘मैं तो निर्धन हूं और नगण्य समझा जाता हूं। उस दशा में क्या तुम्हारी दृष्टि में राजा का दामाद बनना कोई छोटी बात मालुम होती है?’ शाऊल के कर्मचारियों ने शाऊल से दाऊद की बातों को जैसा उसने कहा था बता दिया। तब शाऊल ने फिर कहा, ‘तुम दाऊद से यह कहना, ‘राजा पलिश्तियों की एक सौ खलड़ियों के अतिरिक्त तुझसे कुछ भी दहेज नहीं चाहता कि वह अपने शत्रुओं से बदला ले सके।’ इसमें शाऊल की योजना यह थी कि दाऊद को पलिश्तियों के हाथ मरवा डाले। तब उसके कर्मचारियों ने दाऊद को ये बातें सुनायी तब राजा का दामाद बनना दाऊद की दृष्टि में अनुकूल प्रतीत हुआ। दिन अभी पूरे नहीं हो पाए थे कि दाऊद ने अपने सैनिकों के साथ प्रस्थान किया, और जाकर पलिश्तियों में से दो सौ पुरुषों को मार डाला। तब दाऊद

Creation Autonomous Academy

उनकी खलड़ियों को लेकर आया, और सब की सब राजा को दी जिससे कि वह राजा का दामाद बन सके। अतः शाऊल ने अपनी पुत्री मीकल को उसकी पत्नी होने के लिए दे दिया। (1 शमू० 18:20-27)

दाऊद का स्त्री प्रेम यहीं रुका नहीं यहां तक कि उसके लिए छः पत्नियां भी पर्याप्त नहीं साबित हुईं। (1 शमू० 25:39-44, 2 शमू० 3:2-5, 2 शमू० 5:13-16) अनेक पत्नियों के होते हुए भी वह ऊरिय्याह की पत्नी बेतशेबा के साथ व्यभिचार किया। उसका जीवन दिखाता है कि दाऊद योन सम्बन्ध की समस्या का शिकार था। (2 शमू० 3:12-16, 2 शमू० 12:10, 1 राजा 1:1-4)

अपनी कमजोरियों के चारों तरफ एक बाड़ा बाधेंः-

जैसा कि हमने देखा था कि बुद्धिमान व्यक्ति ने अपनी शक्ति के चारों तरफ एक बाड़ा बांधा था। उसी तरह हमें अपनी कमजोरियों के चारों तरफ बाड़ा बांधना है। प्रार्थना में अपनी कमजोरियों के चारों तरफ एक बाड़ा बांधने के लिए कुछ सुझाावः

1. परमेश्वर से पूछें कि वह आपकी केन्द्रीय कमजोरियों को दिखाए।

    तीन बातें सोचना-

    क-यह विश्वास करना कि कमजोरी है।

    ख-एक कमजोरी है।

    ग-प्रत्येक के पास कमजोरी है।

2. परमेश्वर से उन कमजोरियों से छुड़ाने के लिए प्रार्थना करें।
3. परमेश्वर से उन चीजों को दिखाने के लिए कहें जिनके चारों तरफ एक बाड़ा बांधना है।
4. व्यवहारिक रुप से बाड़ा बांधने के लिए प्रार्थना करें।
5. प्रार्थना में बाड़ा बांधें। यदि आपकी समस्या 'स्त्रियों' के क्षेत्र में है, तो आपको निम्नलिखित प्रार्थना करने की आवश्यकता है।ः

    क-प्रभु मेरी योन आवश्यकता को कम करें।

    ख-प्रभु मुझे स्त्रियों की सुन्दरता से बचाएं।

    ग-प्रभु होने दें कि मैं मात्र अपनी पत्नी ही से प्रेम करुं।

    घ-प्रभु मेरी आंखों पर परदा डाल दे कि मैं सुन्दर स्त्रियों की सुन्दरता को न देखूं।

    च-प्रभु मेरा प्रत्येक मिनट आपकी महिमा के लिए उपयोगी हो।

6. जब आप किसी परीक्षा में डालने वाले व्यक्ति से मिलते हैं तो अच्छा होगा कि उस व्यक्ति से मिलने के पहले आप अपने चारों तरफ एक बाड़ा बांधें। प्रार्थना करें कि वह व्यक्ति आपको आकर्षित न करे। प्रार्थना करें कि उसका कोई भी व्यवहार, स्वभाव व पोशाक आपको योन आवश्यकता की तरफ आकर्षित न करे।
7. जब एक लड़की को आते हुए देखें तब प्रार्थना करेंः 'प्रभु इस लड़की की सुन्दरता के लिए धन्यवाद। होने दें कि इसकी सुन्दरता इसे पाप की तरफ न ले जाए।
8. अपनी अन्य कमजोरियों के चारों तरफ बाड़ा बांधें।
9. जहां आप एक बार गिर चुके हैं उस कमजोरी के चारो तरफ सात चक्रों का बाड़ा बांधें।
10. शैतान का तरीका है कि वह लोगों को गिराने के लिए पाप के प्रति आकर्षण के प्रयोग को न्यूनतम से आरम्भ करता है।

Creation Autonomous Academy

VI. अपने मन -मस्तिष्क के चारों तरफ बाड़ा बांधोः-

पवित्र आत्मा अन्दर से काम करता है। वह व्यक्ति की आत्मा में कार्य करना आरम्भ करता है। वह पहले आत्मा को बदलता है और अन्ततः शरीर को बदलता है। शत्रु अपना कार्य बाहर से आरम्भ करता है और तब अन्दर जाता है। शुद्ध हृदय परमेश्वर के विचार पर सोचता है और विश्वासी को परमेश्वर की बुलाहट चुनाव की तरफ ले आती है।

प्रार्थना द्वारा बाड़ा कैसे बांधें?:-

बाड़ा बांधने के लिए विश्वासी प्रार्थना करे कि मस्तिष्क को सभी समय पवित्रात्मा द्वारा परमेश्वर उपयोग करे।

1. प्रभु प्राण का मूल्य समझने के लिए मेरे मस्तिष्क को खोलें।
2. प्रभु उद्धार को देखने के लिए मेरे मस्तिष्क को खोलें।
3. प्रभु अपनी आवश्यकताओं हेतु प्रार्थना करने के लिए मस्तिष्क को खोलें।
4. प्रभु शैतान के राज्य से आपके राज्य में लोगों को लाने के लिए मस्तिष्क को खोलें।
5. प्रभु नर्क के द्वार को प्रार्थना द्वारा बन्द करने के लिए मस्तिष्क को खोलें।
6. प्रभु प्रार्थना द्वारा स्वर्ग के द्वार को खोलने के लिए मस्तिष्क को खोलें।

उठो!और अपने मस्तिष्क के चारों तरफ बाड़ा बांधने में पवित्रात्मा का सहयोग करो।

VII. दूसरों के चारों तरफ बाड़ा बांधो!:-

एक व्यक्ति के चारों तरफ बाड़ा बांधने के लिए तीन व्यक्ति होते हैं: 1-प्रभु 2-व्यक्ति स्वयं 3-दूसरे व्यक्ति। तीसरा व्यक्ति मध्यस्थता का बाड़ा बांधता है।

परमेश्वर पहले ही अपने प्रत्येक संतान के चारों ओर एक बाड़ा बांध रखा है। व्यक्ति की सुरक्षा के लिए आवश्यक है कि वह अपने चारों तरफ जैसे परमेश्वर ने एक बाड़ा बांधा है वैसे एक बाड़ा बांधे। यदि वह ऐसा नहीं करता तो शत्रु आक्रमण करेगा। यदि बाड़ा बांधने में कोई क्षेत्र छूट गया है तो शत्रु उसे देखेगा। उसी क्षेत्र पर आक्रमण करेगा क्योंकि वहां सुरक्षा नहीं है।

मध्यस्थता का बाड़ा प्रत्येक व्यक्ति, परिवार, शहर, राष्ट्र इत्यादि के चारों तरफ बांधना आवश्यक है। प्रत्येक उन रास्तों के चारों तरफ एक बाड़ा बांधना आवश्यक है जिनसे शैतान अपना बीज व्यक्ति में बोने के लिए आता है।

शत्रु बोता है जब किसान सो जाता है।:-

बाइबल कहती है- उसने एक और दृष्टान्त कहा, 'स्वर्ग के राज्य की तुलना उस मनुष्य से की जा सकती है जिसने अपने खेत में अच्छा बीज बोया। परन्तु जब लोग सो रहे थे, तब उसका शत्रु आया और गेहूं के बीच जंगली बीज बोकर चला गया। पर जब गेहूं में अंकुर निकले और फिर बालें आयीं तो जंगली घास भी दिखाई दी। तब दासों ने आकर स्वामी से कहा, 'हे स्वामी, क्या तूने अपनी भूमि में अच्छा बीज नहीं बोया था? फिर उसमें जंगली घास कहां से आई? और उसने उनसे कहा, 'यह किसी शत्रु का काम है! दासों ने उससे कहा, 'क्या तू चाहता है कि हम जाकर उन्हें बटोर लें?

Creation Autonomous Academy

किसान ने अच्छा बीज बोया। वह सम्भवतः पूरे दिन कार्य किया, और शाम तक उसका कार्य पूरा हो गया था। कौन सा एक मात्र कार्य था जो पूरा हो गया था? यह बुवाई का कार्य था। दूसरा कार्य था जिसको पूरा करने की आवश्यकता थी-वह था पूरे खेत की देखभाल, जब तक शत्रु बीज बोने नहीं आया तब तक। थका हुआ किसान देखभाल नहीं कर सका। कोई दूसरा उसके स्थान पर कार्य नहीं कर सका। परिणाम यह हुआ कि जब लोग सो रहे थे तब शत्रु

आया। स्वयं की योजना और बोने में शत्रु ने कई घंटे लगाएं। प्रातःकाल में उसका कार्य पूरा हुआ। क्या किसान द्वारा बोए गए कुछ बीजों को नष्ट किए बिना उसने अपने कार्य को पूरा किया?

शैतान शत्रु है। वह आज भी बीज बोने का कार्य कर रहा है। आवश्यकता उनकी है जो रात दिन खेत की रखवाली करें। परमेश्वर द्वारा बोए गए बीज के चारों तरफ एक बाड़ा बांधने की आवश्यकता है। परमेश्वर ने बोए गए बीज के चारों तरफ बाड़ा बांध रखा है। परन्तु शैतान एक कार्य करता है वह अच्छे बीजों को नष्ट करता है और तब बुरे बीज बोता है। किसान शत्रु द्वारा की गयी मिलावट को जानता है।

आज उन लोगों की आवश्यकता है जो अपने चारों तरफ एक बाड़ा बांधें और दूसरों के चारों तरफ एक बाड़ा बांधें।

Creation Autonomous Academy

अध्याय-11

शत्रु और उसकी सेना पर हमला करो!

शत्रु सेना को पहचानकर उस पर हमला करना अति आवश्यक है। सुरक्षा घेरा स्थापित करने के बाद अवश्य है कि शत्रु और उसकी सेना पर हमला किया जाए।

1-शत्रु सेना को पहचानो!:-

एक मसीही दुष्टात्माओं के कार्य की स्पष्ट समझ एवं कलवरी पर उनकी वैधानिक पराजय को समझने के द्वारा दुष्टात्माओं के विषय का विशेषज्ञ बन सकता है।

प्रत्येक विश्वासी शैतान और उसकी दुष्टात्माओं पर अधिकार रख सकता है। (लूका 10:1,8,9,17-20) हमारी सेवकाई का मुख्य उद्देश्य दुष्टात्माओं को निकालना नहीं बल्कि खोए हुओं को सुसमाचार प्रचार करना है। इसलिए जिनको दुष्टात्माओं ने परमेश्वर से दूर कर रखा है उन्हें उनके चंगुल से छुड़ाकर, सुसमाचार सुनाकर, उनका परमेश्वर से मेल मिलाप कराना है।

दुष्टात्माओं की शक्ति बंधन के लक्षण निम्न हैं-

Creation Autonomous Academy

1. शारीरिक:-

1. खालीपन
2. मूर्च्छा की स्थिति
3. अत्यधिक बल
4. आन्त्र सम्बन्धी परेशानी
5. विलक्षण प्रतिक्रिया
6. योन इच्छा का बढ़ना
7. श्वास अवरोधन महसूस करना
8. कंठ ध्वनियां
9. सक्रिय/निष्क्रिय प्रतिरोध
10. हिंसक कार्य
11. गंदी गंध

2. भावनात्मक:-

1. निराशा
2. दोष
3. हिंसात्मक मनोदशा

3. बौद्धिक संघर्ष और उलझनः-

दुष्टात्माग्रस्त लोग प्रायः मानसिक संघर्ष और उलझन में पड़े होते हैं।

4. आत्मिकः-

परमेश्वर के वचन के प्रति विरोध

2. हमले की तैयारी करो!ः-

लोगों को शैतान की सामर्थ्य और शासन से मुक्त करने के लिए तैयारी आवश्यक है।

दल का चयन करोः-

बाइबल में दुष्ट आत्माओं को यीशु के द्वारा निकाला गया और अभिषिक्त, सामर्थ्य पाए हुए उन चेलों के द्वारा जिनको उसके द्वारा चुना गया था।

1. नायक चुनोः-

विश्वासियों की स्थानीय संगति में, छुटकारे की सफल सेवकाई के लिए दल का अगुवा सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक है।

यदि सम्भव हो तो एक पुरुष और एक स्त्री को प्रशिक्षण के लिए चुनें। बहुत सी परिस्थितियों में यह सबसे अच्छा होता है कि स्त्रियों की समस्याओं के लिए स्त्रियों के दल का प्रयोग करें और पुरुषों की समस्याओं के लिए पुरुषों के दल का प्रयोग करें।

छुटकारे के दल को बार-बार अशुद्ध आत्माओं को निकालना होगा। ऐसी दुष्टात्माएं जो ग्रस्त व्यक्ति को असामान्य योन व्यवहार की ओर प्रेरित करती हैं ऐसी स्थिति में अधिक उपयुक्त होता है कि ऐसे दुष्टात्माग्रस्त व्यक्ति की सहायता समान लिंग के व्यक्ति द्वारा ही की जाए।

2. सदस्यों को चुनेंः-

दल के अगुवों के लिए सबसे महत्वपूर्ण कार्य यह होता है कि ऐसे पुरुषों और स्त्रियों को खोजा जाए जिनकी योग्यताएं उसकी योग्यताओं के समान हों।

3. योग्यताएंः-

1. निर्दोष हों। (1 तीमु० 3:1-12)
2. विश्वासी हों।
3. पवित्र जीवन व्यतीत करता हो।

Creation Autonomous Academy

दल को प्रशिक्षित करेंः-

एक बार जब दल के लिए पात्रों को चुन लिया है तो उनको प्रशिक्षण दें।

1. अस्त्र-शस्त्र धारण करने का प्रशिक्षणः-

परमेश्वर के अस्त्र-शस्त्र धारण करो। (इफि० 6:14-17) सत्य, धार्मिकता, मेल का सुसमाचार, विश्वास, उद्धार एवं परमेश्वर का वचन धारण करो।

आगे बढ़ने से पहले, यह निश्चय करें कि दल के सदस्यों को बचाव के अस्त्र-शस्त्र को एक -एक करके धारण करने के लिए प्रशिक्षित कर दिया है।

2. आदेश देने का प्रशिक्षणः-

आज्ञा के शब्दों का प्रयोग करें। ‘वे उसकी शिक्षा से विस्मित होते थे क्योंकि उसका उपदेश अधिकारपूर्ण था।’ (लूका 4:32) ‘ इस पर सब लोग चकित हुए----कहने लगे, यह कैसा वचन है। क्योंकि वह अधिकार और सामर्थ्य से अशुद्ध आत्माओं को आज्ञा देता है, और वे निकल जाती हैं।’ (लूका 4:26) ‘उसने अशुद्ध आत्मा को यह कहकर डांटा, हे गूंगी और बहरी आत्मा, मैं तुझे आज्ञा देता हूं कि इसमें से निकल जा------’ (मर० 9:25)

विश्वास के साथ आज्ञा के वचनों का प्रयोग करें। दुष्टात्मा के हमले के विरुद्ध विश्वास तुम्हारी ढाल और सुरक्षा है।

3. पवित्र आत्मा का अभिषेक पाने का प्रशिक्षणः-

दुष्टात्माओं से ग्रस्त लोगों को छुड़ाने के लिए, आज्ञा का वचन प्रयोग करने के लिए आपको पवित्र आत्मा का अभिषेक पाना आवश्यक है।

यह अभिषेक ही है जो व्यक्ति के जीवन पर से शैतान के जुए को तोड़ता है। (यशा० 10:27, लूका 4:18)

पवित्र आत्मा का अभिषेक निकटता से हमारे साथ कार्य करता है जब हम अपने अधिकार को यीशु मसीह में प्रयोग करते हैं। (प्रेरितों० 10:38)

4. लचीलेपन का प्रशिक्षणः-

कार्य करने के तरीके में लचीले बनें। जब हम दुष्टात्माओं को निकालने के कार्य में लगे होते हैं, तो हमारी आवश्यकता होती है कि हमारा नियंत्रण और अगुवाई पवित्र आत्मा के कार्यों और प्रेरणा द्वारा की जाए। (1 कुरि० 12:11)

5. सावधानी का प्रशिक्षणः-

सफलता के घमण्ड के विषय चौकस रहें। लूका 10: 20

6. प्रार्थना और उपवास का प्रशिक्षणः-

याद रखें कि कुछ दुष्टात्माओं को केवल प्रार्थना और उपवास द्वारा ही निकाला जा सकता है। (मत्ती 17:21, मर० 9:21)

7. परमेश्वर की अगुवाई पाने का प्रशिक्षणः-

Creation Autonomous Academy

टीम को चाहिए कि जिस व्यक्ति को सहायता की आवश्यकता है उसके लिए प्रार्थना करने से पहले दल को प्रभु से प्रार्थना करना चाहिए और उसकी अगुवाई मांगना चाहिए।

हमारे छुटकारे के दल में हमें उनकी आवश्यकता होती है, जिनके पास आत्माओं को परखने का वरदान है या बुद्धि का वचन है।

मार्ग तैयार करें।:-

जिनको छुटकारे की आवश्यकता है उन्हें शिक्षा सत्र में बुलाएं। तैयार करने के लिए निम्नलिखित सुझाव हैं।-

1. बाइबल अध्ययन में जाएंः-

सिखाया जाना अविश्वास के बन्धनों को तोड़ता है। यह लोगों को तैयार करता है कि वे प्रभु से प्राप्त करें।

2. बाधक चीजों व सम्बन्धों को नष्ट करें:-

माध्यम, तंत्र- मंत्र, छल्ला, हार ताबीज। भूतसिद्धि के सामान मूर्तियां, चूड़ियां, पांवों की छाप, राख, शरीर के किसी अंग पर बंधे हुए धागे आदि। इस प्रकार के सभी सामान बाधक हैं इन्हें नष्ट कर दें। पाप और शैतान की सब बातों को त्याग देने के लिए कहें। (2 कुरि० 4:2)

3. परमेश्वर से क्षमा के लिए प्रार्थना करें:-

पाप से मुक्ति के लिए परमेश्वर से क्षमा मांगें। (याकूब 5:16, गला० 3:13-14)

4. व्यक्ति को मसीह के पास लाएं:-

यह आवश्यक है कि व्यक्ति को मसीह के पास लाया जाए। उससे कहें कि वह अपने पापों को मान ले। (1 यूहन्ना 1:11) उसे परामर्श दें कि भविष्य में वह पाप के किसी भी क्षण में तत्काल पाप अंगीकार करने के द्वारा उससे मुक्त रहे।

5. पवित्र शास्त्र को कंठस्थ कराएं:-

दुष्टात्माग्रस्त व्यक्ति के लिए प्रार्थना करने से पहले उस व्यक्ति को पवित्र शास्त्र के निम्न भागों को याद करने के लिए दें। गिनती 23:21-24, इब्रा० 2:14-15, लूका 10:17-19, मर० 16:17, याकूब 2:19

इस बात का निश्चय करें कि उन्होंने इन पदों को याद किया, समझा, और इन पर विश्वास किया है। जब इन पदों को याद कर लिया गया हो अब उनके बीच सेवा कार्य आरम्भ हो सकता है।

विजय अभियान आरम्भ करें।:-

1. छुटकारे का कार्य भीड़ से अलग हटकर करें।
2. शारीरिक रुप से सुरक्षित स्थान का उपयोग करें।
3. प्रशंसा-स्तुति और आराधना के साथ आरम्भ करें।
4. व्यक्ति प्रभु पर विश्वास का अंगीकार करे। 'मैं विश्वास करता हूं कि मुझे छुटकारा केवल यीशु मसीह ही दे सकता है।'
5. यीशु मसीह के नाम से, अधिकार के साथ दुष्टात्माओं को निकलने की आज्ञा दो।
6. दुष्टात्माग्रस्त व्यक्ति पर अपने हाथ मत रखो।

Creation Autonomous Academy

विजय प्राप्त स्थानों को सुरक्षित करें!:-

विजय के बाद कार्य समाप्त नहीं हुआ है। दुश्मन से जीती गयी चौकियों पर अपनी सुरक्षा स्थापित करें। छुटकारा पाया व्यक्ति पवित्र शास्त्र को कंठस्थ करें। विश्वासी के अधिकार को समझे। अपने छुटकारे को स्वीकार करे। पवित्र जीवन व्यतीत करें। जिन्होंने उसके विरुद्ध पाप किया है उनको क्षमा करे।

साहसी बनें! परमेश्वर कहता है, 'हियाव बांध और दृढ़ हो, क्योंकि इन लोगों को तू ही उस देश पर अधिकार दिलाएगा जिसको इन्हें देने की शपथ मैंने इनके पूर्वजों से खाई थी।' (यहोशू 1:6)

बिब्लियोग्राफी

1-चरवाहे की लाठी, रल्फ महोनी, कीलपक, चन्नई ।
2-Spiritual warfare: www.en.wikipedia.org
3- Spiritual warfare: Understanding the Battle: www.biblestudytools.com
4- Spiritual warfare: Including tearing down strongholds: www.greatbiblestudy.com
5-What dies the Bible say about Spiritual warfare: www.gotquestions.org
6-What is spiritual warfare: www.truthnet.org
7- Spiritual warfare: www.openbible.info
8-What are Spiritual strongholds: www.spiritualwarfaredeliverance.com
9- Spiritual warfare: Strongholds the Mind—Breaking--: www.youtub.com
10-Breaking Stronghols: www.takehisheart.com
11-Prayer: www.beliefnet.com
12- Prayer: www.biblegotway.com
13- Prayer: www.christianitytoday.com
14- Prayer: www.prayerpartners.com
15- Prayer: www.libertynet.org
16- Prayer: www.biblehub.com
17-Nehemiah: A Man of Prayer and a Man of Action: www.biblecenter.org
18-The Weapon of Prayer: www.cbn.com
19-All the Prayer of the Bible: www.hannahscupboard.com
20-Prayer and Praying Men: www.ccel.org
21-Prayers we pray: www.ransomedheart.com
22-Types of Prayer: www.prayeronline.org
23-Positive Prayers: www.positiveprayers.com
24- Types of Prayer: www.2jesus.org
25-Jac Fomum, Prayer and Spiritual Warfare ,

Creation Autonomous Academy

SPIRITUAL WARFARE

आत्मिक मल्लयुद्ध

Dr. Ram Raj David

Duluvamai, Manikpur, Pratapgarh,
Uttar Pradesh – 230202
Email: drramraj64@gmail.com

Creation Autonomous Academy